चकमक

मार्च, 2004

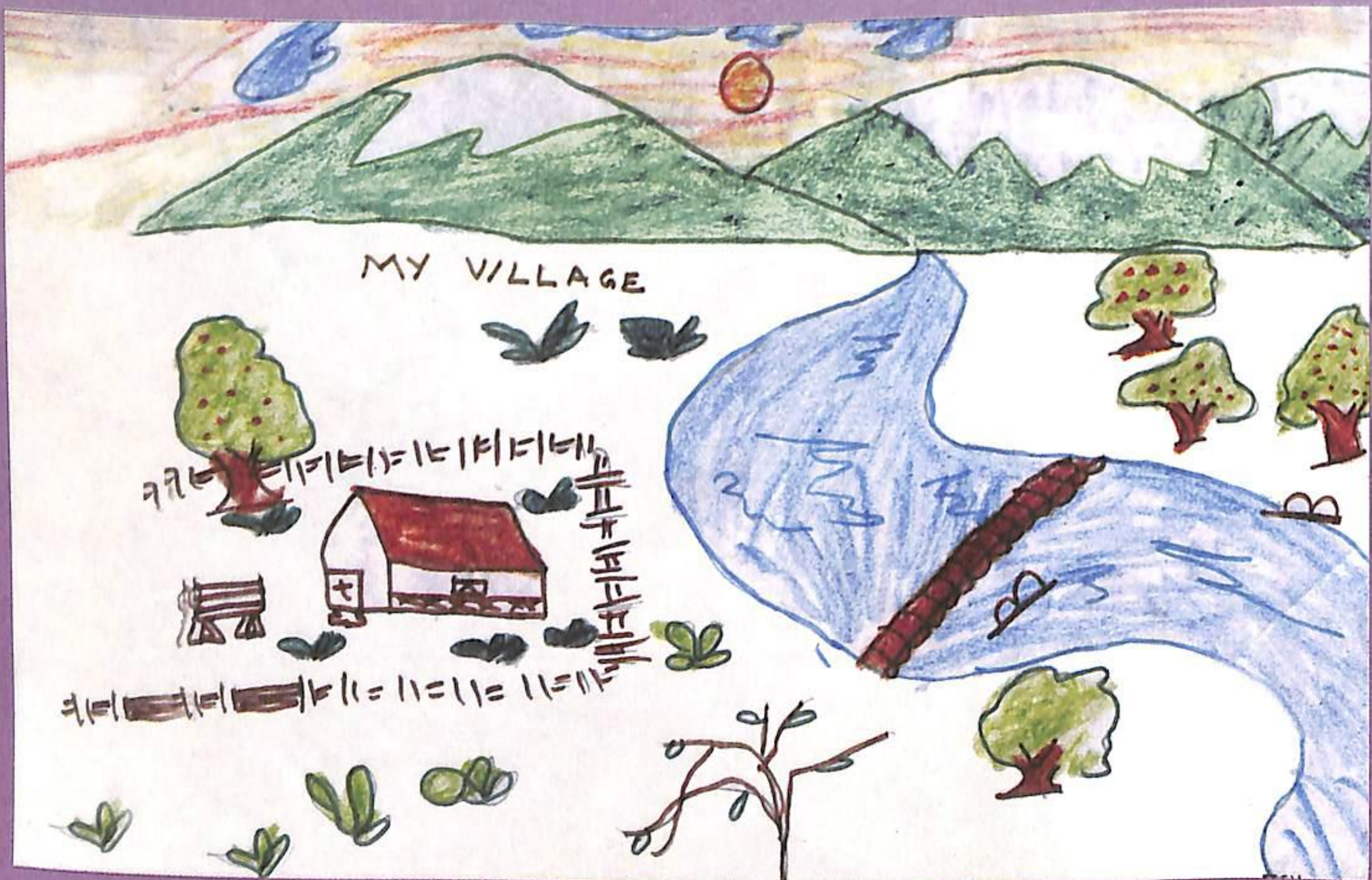
बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 10.00





अक्षितारा, 4 वर्ष, नई दिल्ली



ओटा लेगो, चौथी, रोइंग, अरुणाचल प्रदेश

इस बार की बात . . .

दोस्तो,

इन दिनों तो तुम परीक्षा में लगे होगे। तुम्हारे कुछ मित्रों को इस तनाव से मुक्ति मिल गई होगी। तुम्हारी परीक्षाएँ कब खत्म हो रही हैं? परीक्षा जैसी कई और चीज़ें हैं जिन्हें हम नापसंद करते हैं, जो कई बार हमारा अहित भी करती हैं। पर फिर भी ये सब चीज़ें हमारे आसपास बची हैं। क्या इनका विरोध किए बग़ैर हम इन्हें खत्म कर सकते हैं? क्या तुमने परीक्षा या ऐसी ही किसी और चीज़ पर स्कूल या घर में चर्चा की है?

इस बार चकमक में परीक्षा के आज के रूप पर कई दोस्तों ने सवाल उठाए हैं। बड़ी बेबाकी से अपनी बात कही है। चकमक चर्चा पढ़कर अगर तुम्हारे मन में भी कोई बात आए जो तुम चकमक के पाठकों से बाँटना चाहो तो जरूर लिखना।

इस बार तुमसे एक और बात करनी है... चकमक के ही बारे में! शायद तुमने महसूस भी किया हो! पिछले कुछ अंकों से हमारी कोशिश रही है कि चकमक में कहानी, लेखों की लम्बाई कम रख पाएँ। उन्हें और आकर्षक बनाने के लिए भी कोशिशें जारी हैं। चकमक-चर्चा जैसा तुम्हारा अपना एक और कॉलम शुरू हुआ है। तुम्हें ये बदलाव कैसे लग रहे हैं? कौन से कॉलम तुम्हें अच्छे नहीं लग रहे हैं, ये भी बताना। अगर तुम कोई नया कॉलम चकमक में चाहते तो उसके बारे में भी बताना। क्योंकि सिर्फ तुम्हारा जुड़ाव ही है जिससे हम चकमक को बेहतर बना सकते हैं। हमें उम्मीद है तुम चकमक को एक बेहतर पत्रिका बनाने में मदद करोगे! साथ ही बेरहम परीक्षाओं के लिए हमारी बहुत -बहुत शुभकामनाएँ!

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-19 अंक-9 मार्च 2004

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोना
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम

सहयोग
कविता सुरेश
राकेश खत्री
शिवनारायण गौर

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य

ई-7/ एच आई जी – 453

अरेरा कॉलोनी,

भोपाल - 462 016 (म. प्र.)

फोन : 2463380

eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।



एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-19 अंक-9 मार्च 2004

क्या-क्या है इस अंक में



एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

बूझो पहेली



● अनीता, चौथी

1

बिल में रहता
बिल्ली से डरता
चीं-चीं करता
कुतरता रहता।

2

मैं-मैं मिमियाती,
घास–पत्ती खाती,
दिनभर चरती फिरती,
क्या कहलाती।

3

हल चलाता,
अन्न उगाता,
सारे देश की शान,
है तीन अक्षर का नाम।

4

एक अकेली है काबिज़,
बत्तीस दाँतों के बीच।

● रामचन्द्र राठौर, शाजापुर, म. प्र.



● विनय जैन, छठवीं,
डोंगरगाँव, छ. ग.

1

सब लोगों का साथी सच्चा
पूरे घर का करता रक्षा
नाम है क्या तुम बोलो
घर आओ तब मुझको खोलो

2

हरा हूँ पत्ता नहीं
पालतु हूँ, कुत्ता नहीं
नकलची हूँ, बन्दर नहीं
बूझो तो मेरा नाम सही

3

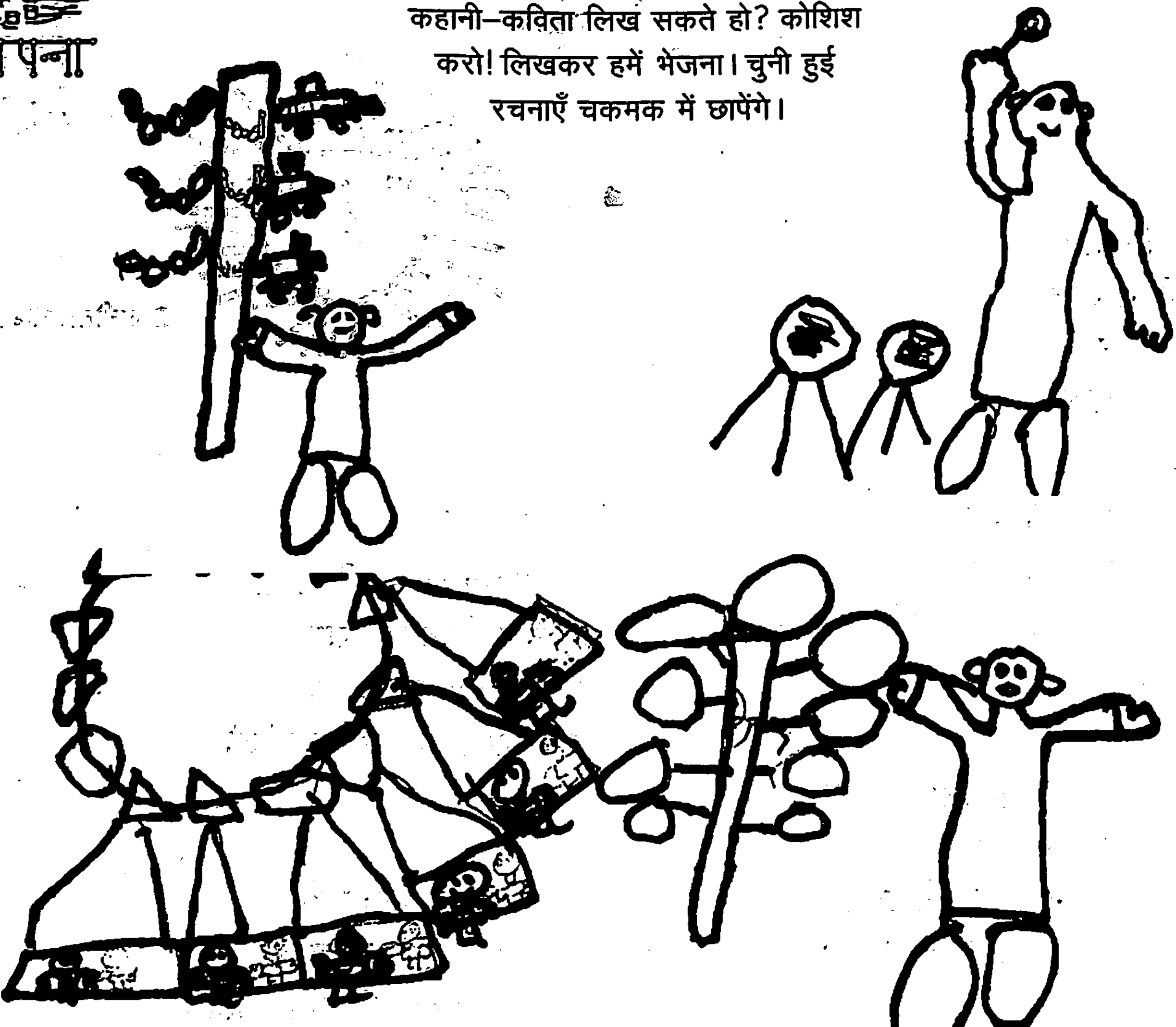
थोड़े पानी को ललचाकर
देख रहा कुछ सोच रहा।
रंग है काला, बुद्धिवाला।
देखो कंकड़ जुटा रहा।

4

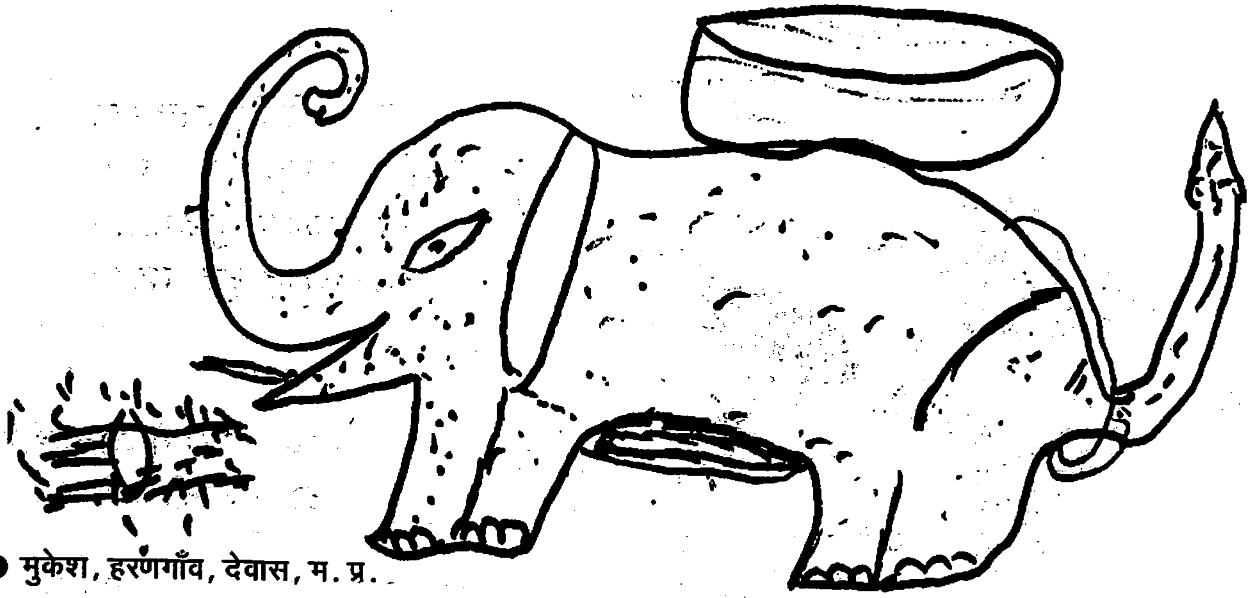
काले जंगल में काला शेर
बताओ जल्दी करो न देर

● कमलसिंह चौहान, दसवीं, रतलाम, म. प्र.

इन दोनों चित्रों को देखकर तुम कोई
कहानी–कविता लिख सकते हो? कोशिश
करो! लिखकर हमें भेजना। चुनी हुई
रचनाएँ चकमक में छापेंगे।



● ऐश्वर्य कुमार वर्मा, दूसरी, भिलाई, छ. ग.



● मुकेश, हरणगाँव, देवास, म. प्र.



राजा और बंदर

एक था राजा, एक था बंदर। दोनों एक दूसरे के मित्र थे। एक दिन दोनों शिकार पर निकले। रास्ते में एक साँप पड़ा था। बंदर सोचने लगा यह हमारा रास्ता रोक रहा है। राजा ने कहा कि तुम रुको मैं उसे उठाकर लाता हूँ। तभी वहाँ से दो कुत्ते गुज़रे। दोनों घबराकर छिप गए। बंदर पेड़ पर चढ़ गया। राजा पेड़ के पीछे छिप गया।

एक चिड़िया पेड़ पर बैठी थी। वह बोली, 'तुम इतने डर क्यों रहे हो?'

बंदर बोला, 'कुत्ते काटने को दौड़ रहे हैं। इसलिए हम वहाँ से भागकर छिप गए।'

चिड़िया बोली, 'क्या तुम दो हो?'

बंदर बोला, 'हाँ राजा मेरे साथ है।'

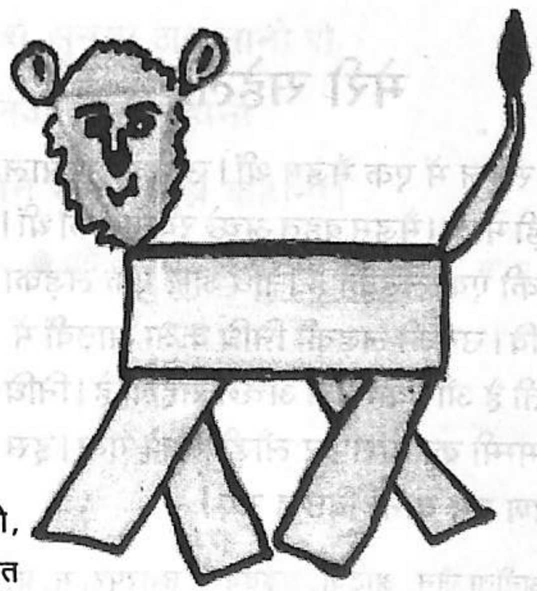
चिड़िया बोली, 'राजा कहाँ है?'

बंदर बोला, 'वो पेड़ के पीछे छिपा है।'

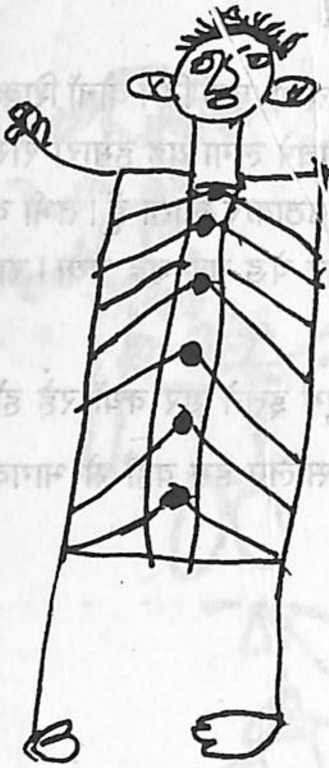
यह सुनकर चिड़िया खूब हँसी। बंदर सोचने लगा चिड़िया हमारी प्रशंसा कर रही है।

● कमलेश बाई नायर, जासलपुर, होशंगाबाद, म. प्र.





● आकाश, तीसरी, अहमदाबाद, गुजरात



● राज, हरणगाँव, देवास, म. प्र.

पेड़ से नदी में कूदे

एक बार की बात है मैं अपने दोस्तों के साथ नदी में नहा रहा था। दोस्तों ने कहा सुन्नू चल आम के पेड़ पर से नदी में कूदते हैं। मैं आम के पेड़ से नदी में कूदने लगा। एक दो बार कूदने पर मुझे मज़ा आया। फिर मैं बार-बार कूदने लगा। नदी में और भी बहुत से लोग नहा रहे थे। उन्होंने हम लोगों से कहा, अरे औ मरोगे क्या वहाँ से कूदकर। पर हम लोगों ने उनकी बात नहीं मानी और कूदते रहे। एक बार जल्दी-जल्दी में मेरा पाँव डाली पर से फिसल गया। और मैं छाती के बल गिर पड़ा। मेरी कोहनी और घुटना छिल गया। मैं बहुत रोया।

● नाजनी सराफत, छठवीं, मालाखेड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.

मेरी सहेली

मेरे स्कूल में एक मैडम थीं। उनका ससुराल लौड़ी में था। मैडम बहुत अच्छे स्वभाव की थीं। उनकी एक लड़की है निधि और एक लड़का है रवि। उनकी लड़की निधि कक्षा आठवीं में पढ़ती है और वह मेरी अच्छी सहेली है। निधि की मम्मी का ट्रांसफर लौड़ी में हो गया। इस कारण हम दोनों बिछड़ गए।

● अनीता जैन, आठवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.



● सुषमा गुर्जर, पाँचवीं, हरणगाँव, देवास, म. प्र.



● अभिलेख मिश्र, चौथी, देहरादून, उत्तरांचल

कौन सुनाए मुझे कहानी

कोई नहीं सुनाता मुझको
अब रोज़ एक कहानी

करूँ किसे फरियाद मैं जाकर
बात न किसी ने मानी
कौन सुनाए मुझे कहानी।

मैं नानी से रहता हूँ
कोसों कोसों दूर
नानी के घर जाऊँ कैसे
कितना हूँ मजबूर

कैसे सुनता अब नानी से
उनकी बात सुहानी
कौन सुनाए मुझे कहानी।

● प्रमेन्द्र सिंह राजपूत, कुड़ावा, हरदा, म. प्र.



● दीपक, हरणगाँव, देवास, म. प्र.

लड़के पर तारकोल गिरा

एक दिन सड़क बनाने वाले सड़क बना रहे थे। कुछ लोग तारकोल बना रहे थे। वो लोग तारकोल बनाकर ला रहे थे।

पीछे से एक लड़का आ रहा था। वह बिलकुल तारकोल के पास से ही आ रहा था। जो लोग तारकोल ले जा रहे थे उनके हाथ का डण्डा टूट गया। उस लड़के पर तारकोल गिरा। लड़का चिल्लाने लगा। सब लोग आए और उस लड़के के कपड़े तुरन्त फाड़ दिए।

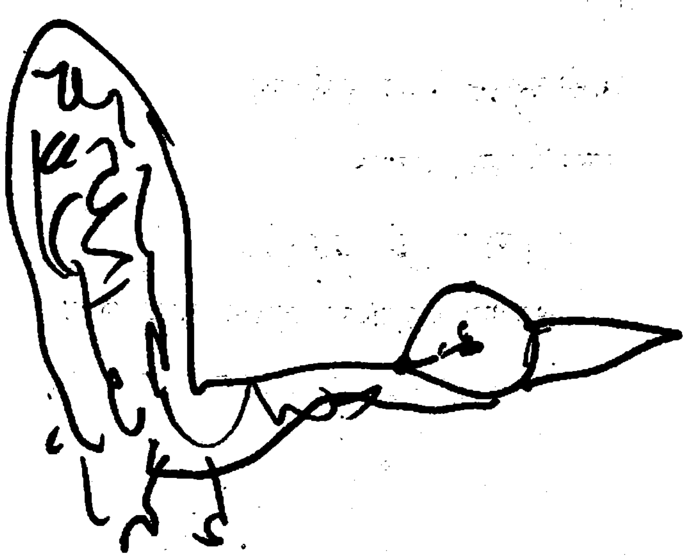
उस लड़के का शरीर जल गया था। लेकिन उसका मुँह नहीं जला था। सब लोग उसे अस्पताल ले गए। अब वह लड़का ठीक है। लेकिन अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुआ है।

● दीपिका मिश्रा, तीसरी, फैज़ाबाद, उ. प्र.

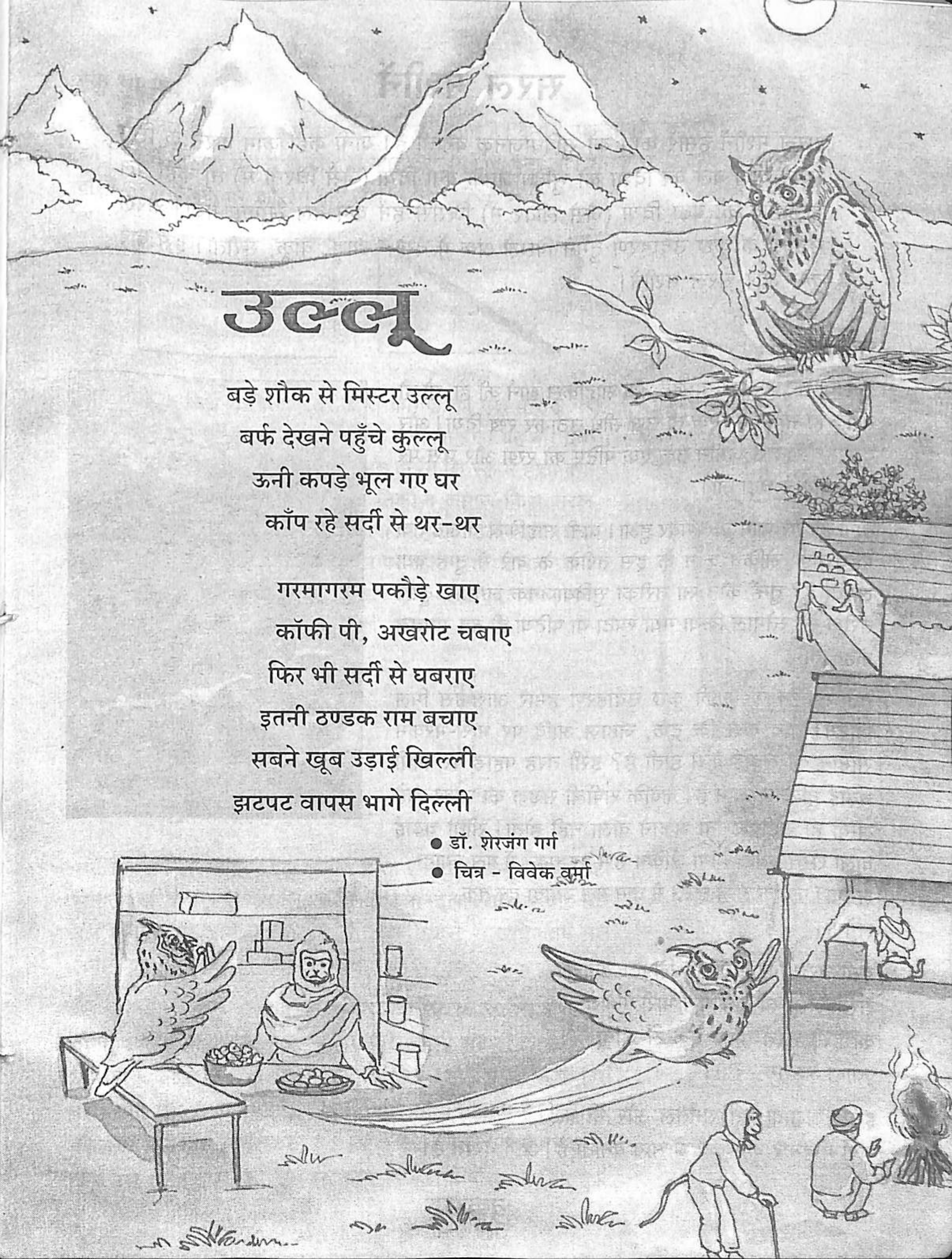
चुनमुन चिड़िया

चुनमुन चिड़िया रूठ गई है
ना जाने क्या नाराजी है
खिड़की पर अब तनिक न आती
दूर-दूर ही भाग जाती
दाना भी वह एक न खाती
पानी पीने भी ना आती
गलती इतनी हुई थी केवल
जिस पर गुस्सा दिखलाती है
डाँट दिया था मैंने उसको
शायद वह डर जाती है
प्रेम स्नेह की भूखी है वह
इसीलिए सबको भाती है।

● हरीशचंद्र वर्मा, रमतला, बिलासपुर, छत्तीसगढ़



● अमन, के.जी. सेकेंड



उल्लू

बड़े शौक से मिस्टर उल्लू
बर्फ देखने पहुँचे कुल्लू
ऊनी कपड़े भूल गए घर
काँप रहे सर्दी से थर-थर

गरमागरम पकौड़े खाए
कॉफी पी, अखरोट चबाए
फिर भी सर्दी से घबराए
इतनी ठण्डक राम बचाए
सबने खूब उड़ाई खिल्ली
झटपट वापस भागे दिल्ली

● डॉ. शेरजंग गर्ग
● चित्र - विवेक वर्मा

सरल मशीनें

सरल मशीनें हमारे काम को सुविधाजनक बनाती हैं। यानी कहीं काम करने के लिए लगने वाले बल की दिशा को सुविधाजनक बना दिया (जैसे घिरनी में) तो कहीं बल के प्रभाव को बढ़ा दिया (जैसे लीवर में) जिससे हमें कम बल लगाना पड़ा। सरल मशीनों के कुछ उदाहरण तुमने पिछले अंक में देखे - झाड़ू, चाकू, सरोता। इस बार कुछ और सरल मशीनें।

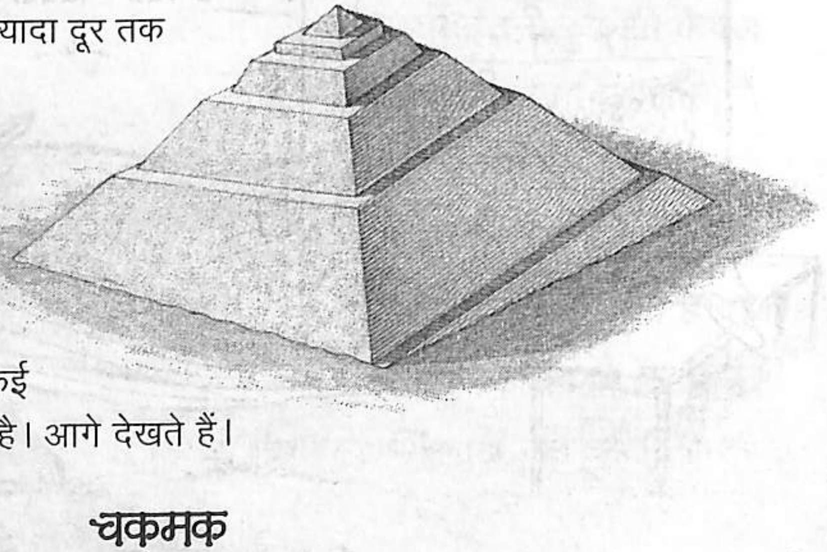
नत समतल



समस्या घर की ऊँची चौखट तक साइकिल लाने की हो, तो दो तरीके हो सकते हैं। एक तो उसे सीधे उठाकर रख दिया। और दूसरा चौखट से ज़मीन तक एक पटिए को रखा और उस पर से साइकिल चढ़ा ली।

दोनों ही बार काम तो बराबर हुआ। यानी साइकिल चौखट तक पहुँच गई। लेकिन काम के इस तरीके के बारे में तुम्हें क्या लगता है? तुम्हें कौन-सा तरीका सुविधाजनक लगता? दूसरे तरीके में इस्तेमाल किया गया रपटा या पटिया ही नत समतल कहलाता है।

नत समतल के काफी कुछ उदाहरण हमारे आसपास मिल जाएँगे। याद करो कि ट्रक, जहाज़ आदि पर भारी-भरकम सामान की लदाई कैसे होती है? इसी तरह पहाड़ पर सीधी चढ़ाई मुश्किल काम है। जबकि सर्पीली सड़क का सफर चाहे लम्बा ही सही, उतना थकाने वाला नहीं होता। सीधी चढ़ाई वाला रास्ता छोटा होगा लेकिन उस पर चढ़ने में बल ज़्यादा लगेगा। जबकि लम्बे रास्ते में कम बल ज़्यादा दूर तक लगेगा।

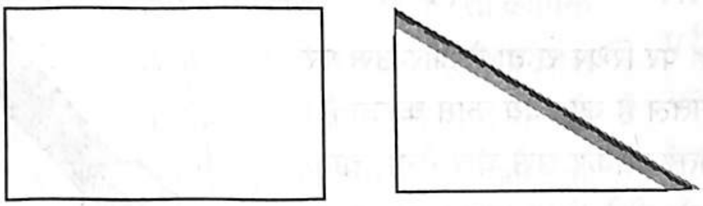


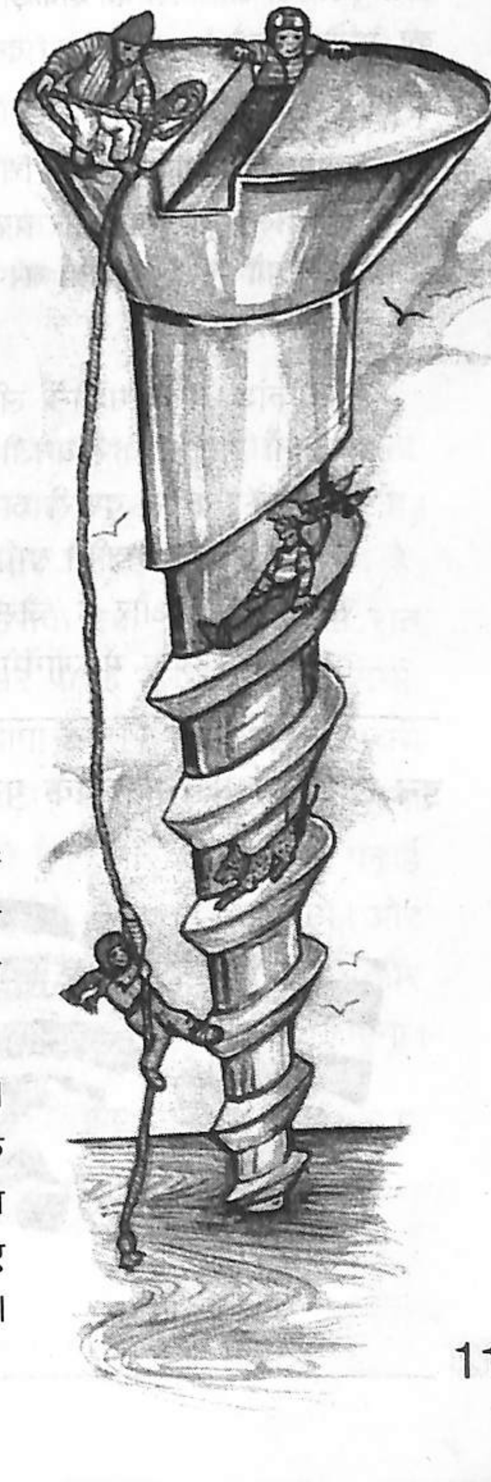
इसी तरह पिरामिड पर लिपटा ढलवाँ रास्ता लम्बा तो है लेकिन भारी पत्थरों को इसी रास्ते ऊपर तक ले जाना ज़्यादा आसान रहेगा।

इसके अलावा नत समतल और भी कई रूपों में हमारे काम को आसान बनाता है। आगे देखते हैं।

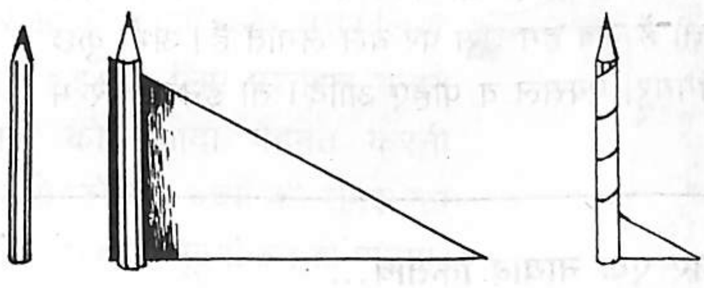
स्क्रू या पेंच

स्क्रू दरअसल एक सरल मशीन से बनी सरल मशीन है। कैसे? एक चौकोर काग़ज़ को चित्र में दिखाए तरीके से बीच से काटकर समकोण बना लो। समकोण के कर्ण वाली तरफ के किनारे को रंग कर लो।





अब नीचे के चित्र में दिखाए तरीके से कागज़ को एक पेंसिल पर लपेट दो। रंगीन किनारा ऊपर की ओर होना चाहिए। यह बन गया हमारा स्क्रू का मॉडल। इसे खोलकर हम देखेंगे कि स्क्रू में होता क्या है। पहले बताओ कि समकोण वाला तिकोना कागज़ किस सरल मशीन जैसा दिखता है? तुमने सही जाना। यह एक ढलानदार सतह या नत समतल जैसा ही है। इसे पेंसिल पर लपेटने पर वह स्क्रू जैसा दिखने लगता है। यानी स्क्रू दरअसल एक बेलनाकार वस्तु पर लिपटा नत समतल है।



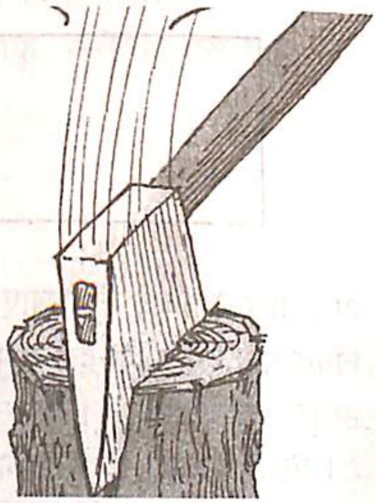
जब हम लकड़ी आदि में स्क्रू लगाते हैं तो इकट्ठा एकमुश्त बल नहीं लगाते। बल्कि स्क्रू के पेंच जितनी लम्बी ढलानदार सतह पर धीरे-धीरे बल लगाते हुए आगे बढ़ते हैं। यानी कम प्रयास से अधिकतम बल लगाने का काम स्क्रू द्वारा किया जाता है।

यहाँ एक ही आकार के एक कील और एक स्क्रू की तुलना करते हैं। दोनों किसी लकड़ी में समान दूरी तय करें, तो भी लकड़ी के साथ स्क्रू के सम्पर्क की सतह कहीं ज़्यादा होती है। साथ ही स्क्रू की सतह उस पर लिपटे नत समतल के कारण खाँचेदार भी बन जाती है। इसलिए कील की बनिस्बत स्क्रू लकड़ी को ज़्यादा मज़बूती से जकड़े रहता है। और उसे सीधा बाहर की ओर खींचकर निकालना मुश्किल होता है।

पच्चर



हवा से भड़भड़ाते दरवाज़े को काबू में रखने का एक तरीका है कोई नुकीला पत्थर उसके नीचे फँसा देना। यह नुकीला पत्थर पच्चर के आकार का होता है। और पच्चर है दो जुड़े हुए नत समतल।



ज़्यादातर मामलों में नत समतल एक जगह पर स्थिर रहता है और उस पर काम होता है। लेकिन पच्चर ऐसा नत समतल है जो स्वयं काम करता है। जैसे कुल्हाड़ी की फाल का लकड़ी के भीतर जाकर उसे चीर देना, चाकू का सब्ज़ियाँ वगैरह काट देना। दरवाज़े के नीचे फंसा पत्थर क्या काम करता है?

इसमें एक मज़ेदार बात और है। चित्र में देखो। कुल्हाड़ी की फाल लकड़ी में घुसने के लिए आगे की ओर बढ़ती है। पर इससे लकड़ी में लग रहा बल लकड़ी को फाल के दोनों तरफ कर देता है। और नतीजा दो फांक में बंटी लकड़ी।

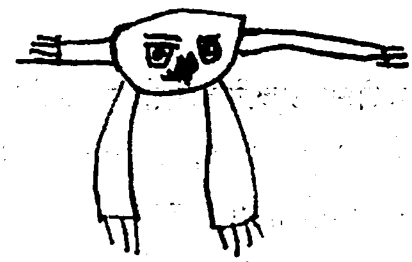
अधिकांश बड़ी मशीनें लीवर, घिरनी, गियर, एक्सल व पहिए जैसी कई सरल मशीनों से मिलकर बनती हैं। सभी मशीनों का बल से सम्बंध होता है। कुछ में वे बल को एक से दूसरी जगह स्थानांतरित करती हैं तो कहीं बल के प्रभाव को बढ़ा देती हैं। सरल मशीन तभी काम करती हैं जब हम उस पर बल लगाते हैं। अभी कुछ सरल मशीनें और हैं, जैसे घिरनी, गियर, एक्सल व पहिए आदि। तो इनके बारे में हम अगले अंक में जानेंगे।

परीक्षा बच्चों की नज़र में...



आज जो परीक्षा ली जाती है वह छात्र का सही मूल्यांकन नहीं करती क्योंकि आज छात्र बीस प्रश्न पढ़कर पास हो जाते हैं। आप जो याद करके गए हैं वह परीक्षा में आ जाए तो पास, नहीं तो फेल। यह परीक्षा कहीं भी इस बात का मूल्यांकन नहीं कर पाती कि वास्तव में आपने पूरा पाठ्यक्रम समझा है कि नहीं।

● **ममता, नवमीं, हरदा, म.प्र.**



परीक्षा आते ही हम मन लगाकर पढ़ाई करते हैं। हमें परीक्षा देते समय डर लगता है। ऐसा लगता है कि फेल नहीं हो जाएँ मगर हमारी परीक्षा इसलिए ली जाती है कि बच्चों ने जो पढ़ा वो उन्हें याद है कि नहीं। अगर हमें डर लगता है तो जो हम याद करके जाते हैं वो भूल जाते हैं।

● **स्वरूप सिंह राजपूत, सातवीं, हरदा, म.प्र.**

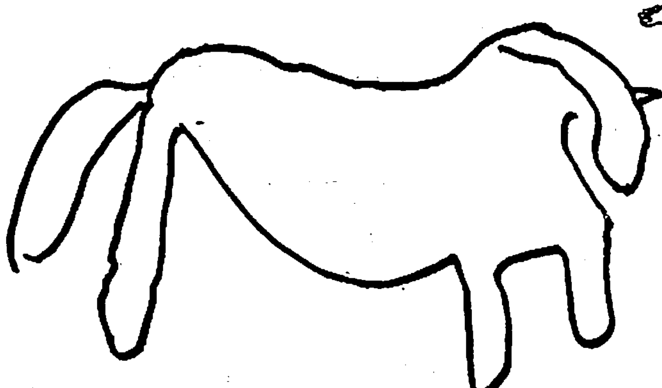
परीक्षा खुली किताब पर आधारित होनी चाहिए। बच्चे उन्हें लेकर परीक्षा में जा पाएँ। और उत्तर लिख सकें। इसके लिए प्रश्नपत्र बनाने वाले को ज़्यादा मेहनत करनी पड़ेगी। लेकिन बच्चों की समझ का ठीक तरह से मूल्यांकन हो पाएगा।

● **विकास, दसवीं, हरदा, म.प्र.**



परीक्षा के एक महीने पहले ही पढ़ाई अच्छी चलने लगती है। और जिस दिन पेपर रहता है, उसके एक दिन पहले तो रात भर पढ़ाई करते हैं। और मम्मी पापा कहते हैं कि मेरा बेटा अच्छी पढ़ाई कर ले! फिर तुम्हें खेलना ही है। अगर तुम अच्छी पढ़ाई करोगे तो पास हो जाओगे। और नहीं तो फेल हो जाओगे। और हमारा साल बर्बाद हो जाएगा।

● **पंकज कुमार भायरे, सातवीं, हरदा, म.प्र.**



●चित्र : नौशाद शाह, देवास, म.प्र.

परीक्षा अच्छी लगती है। क्योंकि मैडम थोड़ा-थोड़ा बताती है। फेल होना गंदा लगता है। एक बार एक विषय में फेल होने पर मम्मी डाँटी थी। फेल होने पर प्यार करना चाहिए।

● सुदीपराज, पहली, कटनी, म. प्र.



● चित्र: सुमत राठौर, होशंगाबाद, म.प्र.

परीक्षा इसलिए अच्छी लगती है कि इससे अगली क्लास में जाते हैं। परीक्षा में चीटिंग करने वाले बच्चे ज्यादा नम्बर लाते हैं तो दुख होता है।

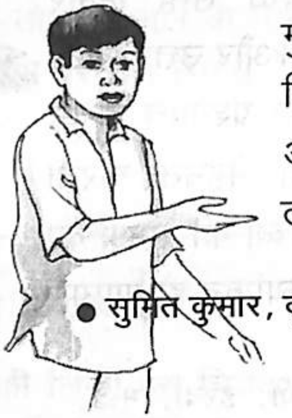
● दीक्षा कुमारी, चौथी, कटनी, म. प्र.



अगली क्लास में जाने के लिए परीक्षा देता हूँ नहीं तो नहीं देता। यदि परीक्षा नहीं होती तो रोज़ पढ़कर उसी दिन उत्तर लिखकर दिखा देता।

● कुमार सौरभ, पाँचवीं, आरा, बिहार

● चित्र : आकाश खिंदरी, तीसरी, अहमदाबाद, गुजरात



मुझे परीक्षा बिल्कुल ही अच्छी नहीं लगती है।

● सुमित कुमार, दूसरी, आरा, बिहार

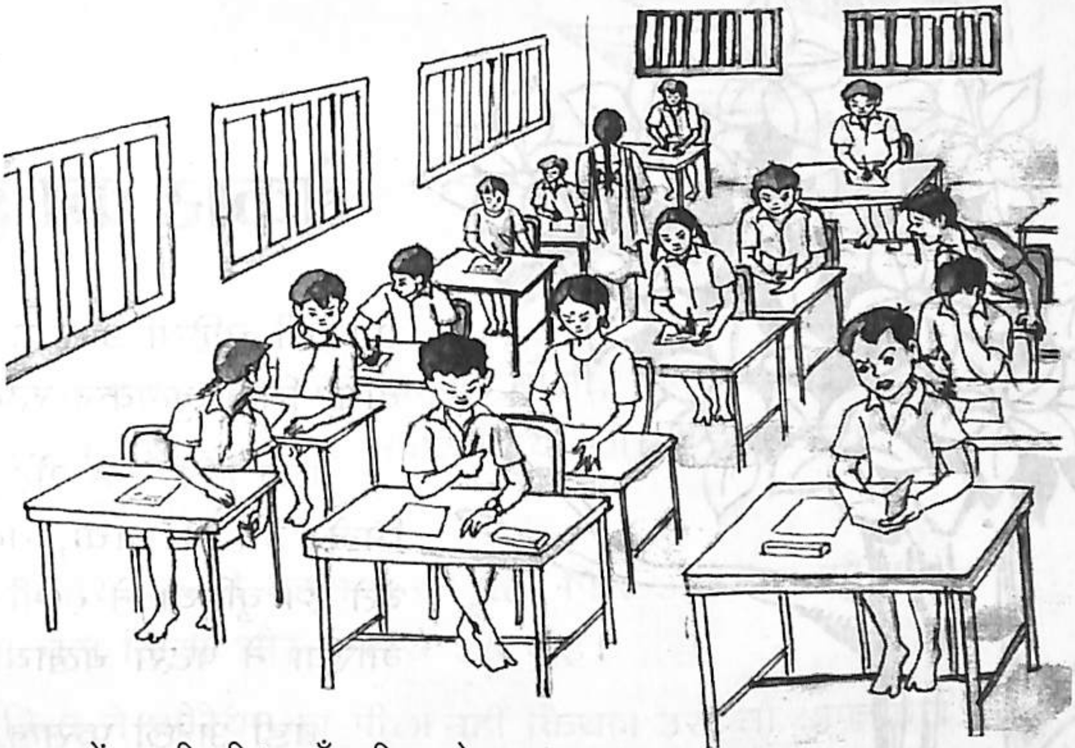


मुझे तो परीक्षा अच्छी लगती है। पास होने के लिए परीक्षा देना जरूरी नहीं रहता तो भी परीक्षा देती।

● शिवांगी, तीसरी, आरा, बिहार

परीक्षा नहीं होती तो कितना मज़ा आता। पर क्या करूँ? अगली क्लास में भी तो जाना है, परीक्षा तो देनी ही पड़ेगी।

अदिति राज, यूकेजी, आरा, बिहार



पहले मैं सरकारी स्कूल में पढ़ती थी। वहाँ परीक्षा से बहुत डराइत रहेन काहे कि वहाँ थोड़ा इधर-उधर हिलो तो मार पड़ती थी। मुंशीजी बाल खींचकर सीधे बैठा देते थे। तब ऐसा लगता था परीक्षा न होती तो अच्छा रहता।

● कंचनलता, दूसरी, नालंदा विद्यालय, लखनऊ

पहले हम जिस स्कूल में पढ़ते थे उसमें कहने को परीक्षा होती थी। मुंशीजी सारे उत्तर लिख देते थे। हम सब वह उत्तर लिख लेते थे। जो बच्चे उत्तर जल्दी नहीं उतार पाते थे। उनको मार पड़ती थी। तब लगता था कि परीक्षा बेकार ही होती है। न हो तो अच्छा है।

● विमला, तीसरी, नालंदा विद्यालय, लखनऊ, उ. प्र.



● चित्र : असलम, हरणगाँव, देवास, म. प्र.

पहले वाले स्कूल में पहले दिन कुछ समझाते हैं और अगले दिन पूछने लगते हैं। अगर न बता पाए तो मारने लगते हैं। वहाँ परीक्षा में मुझे तो लिखना ही नहीं आता था तो मैं रोने लगती थी।

● पिंकी, तीसरी, नालंदा विद्यालय, लखनऊ, उ. प्र.



बेकार का झगड़ा

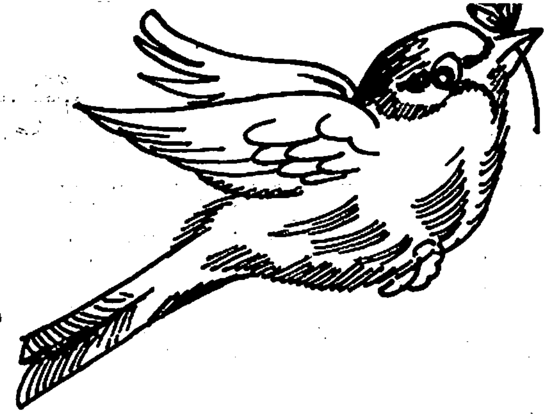
एक थी चुहिया और एक थी गौरैया। दोनों मिल-जुलकर रहती थीं।

एक बार उन्हें गेहूँ के तीन दाने मिले। उन्होंने सोचा, चलो, इन्हें बो देते हैं। चुहिया ने ज़मीन जोती। गौरैया ने पटरा चलाया।

बड़ी अच्छी फसल उगी। चुहिया और गौरैया ने सारे दाने बटोर लिए और फिर बाँटने लगी। एक दाना चुहिया का, एक दाना गौरैया का... बाँटते-बाँटते आखिर में एक दाना बच गया।

यह दाना मेरा है। मैंने जब ज़मीन जोती थी तो नाक और पंजों में छाले पड़ गए थे। चुहिया बोली।





गौरैया कहाँ पीछे रहने वाली। बोली, नहीं यह दाना मेरा है। मैंने जब पंखों से खेत सपाट किया था तो सारे पंख लहूलुहान हो गए थे।

बड़ी देर तक वे बहस करते रहे। फिर अचानक गौरैया ने दाना चुग लिया और फुर्र से उड़ गई।

चुहिया ने गौरैया का पीछा नहीं किया। उसे तो अफसोस हो रहा था कि बेकार ही झगड़ा किया। अपना हिस्सा वह बिल में ले गई। और फिर इंतज़ार करने लगी कि गौरैया आए तो उससे सुलह कर ले।

पर गौरैया लौटकर आई ही नहीं। उसका हिस्सा भी चुहिया अपनी कोठरी में ले गई। सारा जाड़ा उसने चैन से काटा। पर दोस्त के खो जाने से दुखी थी।

गौरैया के कुछ भी हाथ नहीं लगा। जाड़े भर भूखी रही।

राजकुमार जैन 'राजन'
चित्र - सुनील लांडगे



चित्र-पहेली

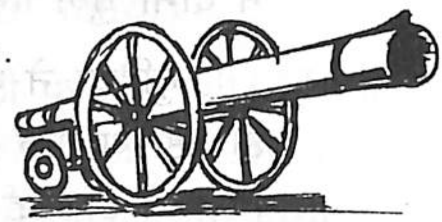
1			■	2	■	3		4
	■	■	5		■	■	■	
6	7			■	8	9	■	
■		■	10		■		■	
11		12		■	13		14	
	■		■	15		■		■
	■	16		■	17			18
	■	■	■	19		■	■	
20			■		■	21		

5.



6. फिसलना का पर्यायवाची चार अक्षरों का एक शब्द

8.



संकेत : बाएँ से दाएँ

1.



3.



10.

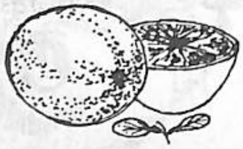


11. वनों में रहने वाले लोग (4)

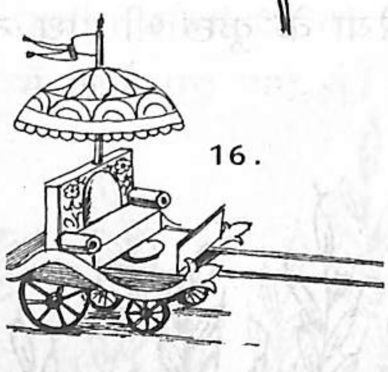
13.



15.



16.



17.



19.



20.

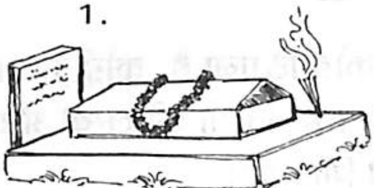


21. जब सिर ओखली में दिया तो ... से क्या डरना



संकेत: ऊपर से नीचे

1.



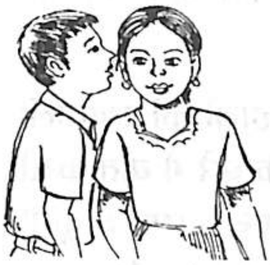
2.



4.



5.



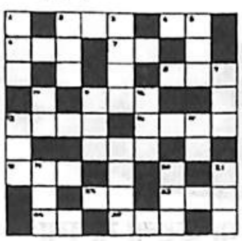
7.



9.



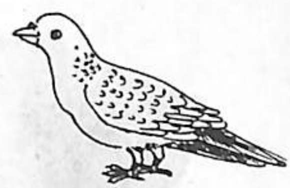
11.



12.

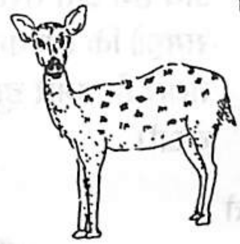


13.



14. प्रवेश के अर्थ वाला एक उर्दू वाला शब्द (3)

18.

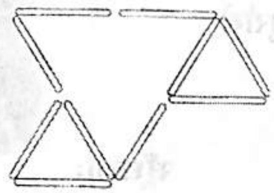


19.



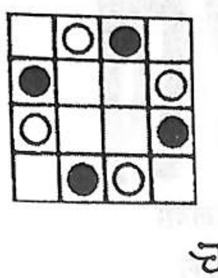
फरवरी 2004 के माथापच्ची हल

1.



3. इस कड़ी में अंकों का अन्तर 2, 3, 4, 5 है अगला अंक 6 के अंतर से आएगा। यानी 15 और 6 इक्कीस!

5.



फरवरी 2004 की चित्रपहेली के हल

	च	ना				बे	ट	
क		ग	धा		न	ल		
व			व	रा	ह			शी
च	क	म	क		र	स्सा	क	शी
	मी						टा	
रा	ज	स्था	न		मी	ठी	ई	द
ह			ह	ल	ना			र
		ता	ला		र	वि		जी
	ज	ड़				दा	ढ़ी	

हम सब कुत्ते हैं

हम सब अलग-अलग दिखते ज़रूर हैं लेकिन हैं सभी कुत्ते। कोई ठिगना है, कोई ऊँचा। किसी के कान लम्बे हैं तो किसी के छोटे। किसी की पूँछ छोटी है, किसी की लम्बी और किसी की खूब झबरीली। चलो तुम्हें अपने भरे-पूरे परिवार से मिलवाएँ।

वैसे तो हमारे परिवार में कई तरह के कुत्तों के अलावा लोमड़ी, सियार और भेड़िए भी आते हैं। लेकिन यहाँ हम सिर्फ अलग-अलग कुत्तों से ही मिलेंगे।

तुमने हमें कई जगहों पर देखा होगा। घरों में, गलियों में, खेत खलिहानों की रखवाली करते। क्या हमारी हरकतों पर गौर किया? सबसे पहले इन्हीं हरकतों के बारे में बात करते हैं। हमारे कुछ खास गुण होते हैं। नीचे के चित्रों को देखो। जब तुम अपने आसपास कुत्तों को ऐसी हरकतें करते देखो तो फौरन पहचान लेना कि इसका क्या मतलब है।



सुनने की कोशिशः
हमारी सुनने की शक्ति बहुत अच्छी होती है। हमारे इसी गुण के कारण हम अच्छी तरह बात कर पाते हैं। आजकल कहीं-कहीं हम कुत्तों की सहायता से बहरे लोगों को सुनने में मदद करने की कोशिश की जा रही है।



लड़ाई की तैयारीः
हमारे ज़्यादातर साथी हिंसक होते हैं। लड़ने की तैयारी में हम सीधे खड़े हो जाते हैं। हमारी पूँछ तन जाती है। गर्दन आगे की ओर खिंच जाती है और मुँह खोलकर गुर्राने लगते हैं।



झुकना या कहना माननाः
जब हम इस तरह लेट जाएँ तो समझो कि हम कहना मानने को तैयार हैं। हमारे झुके हुए कान देखो।



सूँघनाः
हम सभी की सूँघने की शक्ति खूब तेज़ होती है। हम सूँघकर अपनी जगह व अपने दोस्तों को पहचानते हैं। सूँघने की इसी शक्ति के कारण हम चोरों को पकड़ने में भी मदद करते हैं।



संदेश देना



अजनबी को पहचानना



अनोखी माँग

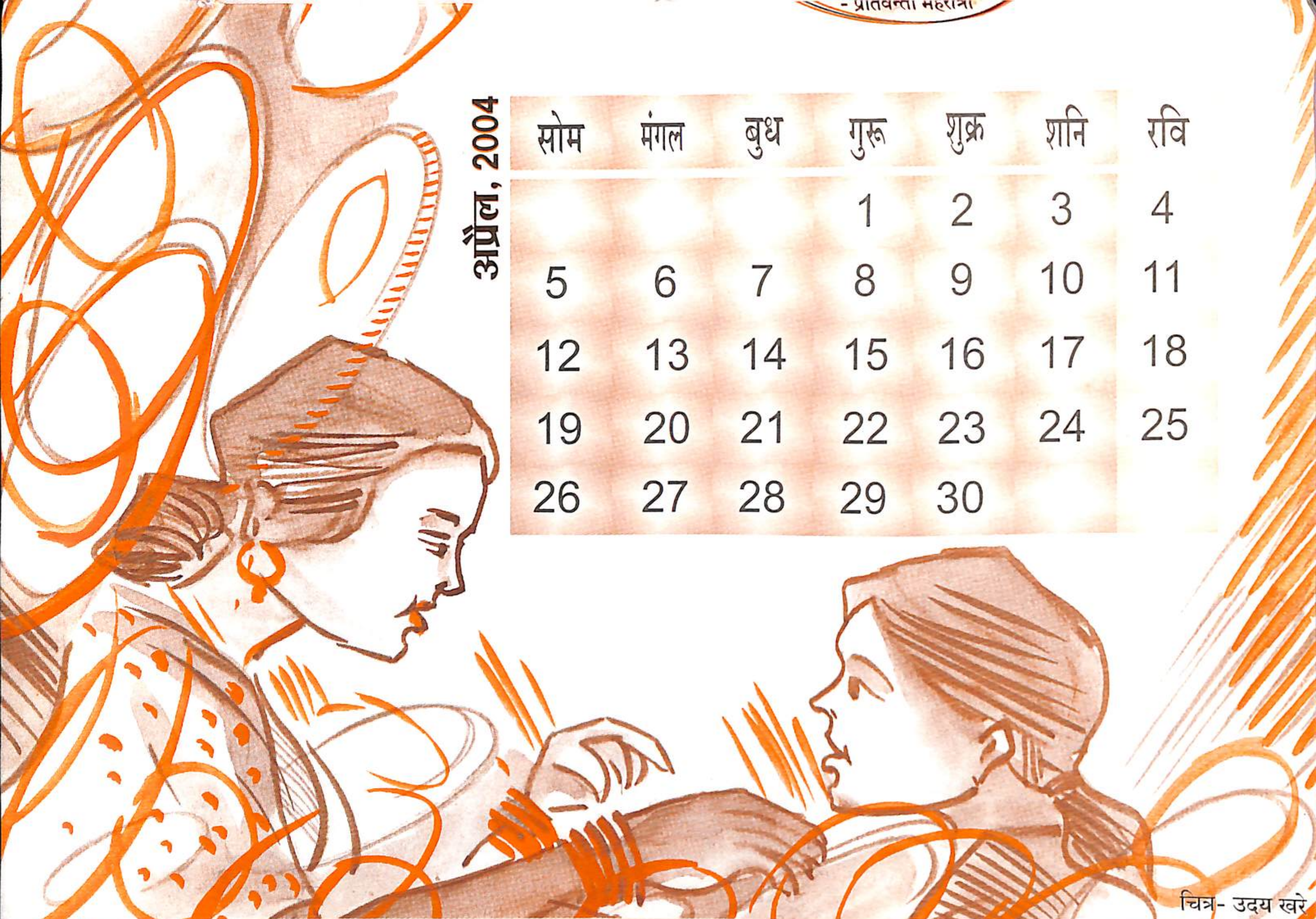
अम्मा, मैं भी चूड़ी पहनूँगा
दीदी चूड़ी पहन रही है, भाभी चूड़ी पहने।
तू भी चूड़ी रोज पहनती, और पहनती गहने।
मैं भी चूड़ी पहनूँगा।

अम्मा, तू ही तो कहती है :
बच्चे-बड़े सब एक समान हैं,
बेटा-बेटी, भाई-बहनें
फिर भी मुझे नहीं है देती, चूड़ी कभी पहनने।
मैं तो चूड़ी पहनूँगा।

अम्मा, जल्दी ले दे मुझको
रंग-बिरंगी चूड़ियाँ और सुन्दर-सुन्दर गहने।
नहीं टलूँगा, नहीं सुनूँगा, बातें दे तू रहने।
मैं चलूँ न तेरे कहने।
मैं तो अभी चूड़ी पहनूँगा।

अप्रैल, 2004

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		



चित्र- उदय खरे

तुम जानते हो हमारा सबसे छोटा साथी केवल छह इंच ऊँचाई का होता है, जबकि सबसे बड़ा लगभग ढाई फीट ऊँचा। यहाँ विभिन्न देशों के कुत्तों के चित्र दिए हैं। इनमें से कुछ कुत्ते भारत में भी पाए जाते हैं। देखो तुम किन-किनको पहचान पाते हो।

मध्यम आकार का कुत्ताः इंग्लिश कुनहाउंड



ऊँचाईः 21-27 इंच
वज़नः 30 किलो

मैं शिकारी कुत्ता हूँ। पुराने ज़माने में युरोप में लोमड़ियों और छोटे जानवरों का शिकार हुआ करता था। इन जानवरों को ढूँढने और खदेड़कर निकालने के लिए शिकारी मुझे अपने साथ रखा करते थे। मेरे कान लम्बे और लटके हुए हैं।

सबसे छोटा कुत्ताः चिहुआ हुआ



ऊँचाईः 6-9 इंच
वज़नः 1-3 किलो

मैं हूँ गोल मुँह और छोटे व खड़े कान वाला कुत्ता। **चिहुआ हुआ,** यह नाम मुझे मेरे अपने प्रदेश से मिला है। मैं मैक्सिको का रहने वाला हूँ। तेज़ ठण्ड, घबराहट में मैं तुम इन्सानों की तरह थरथराने लगता हूँ।

बुलडॉग



ऊँचाईः 12-14 इंच
वज़नः 23-25 किलो

मेरा चेहरा ध्यान से देखो। ये जो मेरा सिर है उसका घेरा मेरी ऊँचाई के बराबर है।

एलसेशन

ऊँचाईः 23-25 इंच
वज़नः 34-42 किलो



मुझे तुमने कई जगह देखा होगा। मुझे पाला जाता है और चोरों को ढूँढने में मैं पुलिस की सहायता भी करता हूँ। टी.वी. के कुछ जासूसी सीरियल में मुझे पाओगे। मेरा मूल निवास जर्मनी का है इसलिए मुझे जर्मन शेपर्ड भी कहा जाता है।

अब तुम्हें कुछ और दोस्तों के फोटो दिखाते हैं। देखो इनका मुँह कैसा है? कान कैसे हैं? पूँछ कैसी है? ये दूर देशों के निवासी हैं। इसलिए शायद ही तुमने इनमें से किसी को देखा हो।

लेब्राडोर



ऊँचाई: 21-22 इंच
वज़न: 25-35 किलो

बहुत पहले शिकारियों द्वारा पानी में गिराई चिड़ियों को पकड़कर लाना इनका जिम्मा होता था। ये अच्छे तैराक हैं। आजकल इनका धंधा बदल गया है। अब ये नशीली दवाएँ और बम ढूँढने का काम करते हैं।

लोशेन



ऊँचाई: 10-13 इंच
वज़न: 4-8 किलो

चूंकि इनका चेहरा शेर जैसा है इसलिए इन्हें पालने वाले लोग इनके पिछले हिस्से और पूँछ के बाल काटकर पूरी तरह शेर जैसा बना देते हैं। इसी से इनका दूसरा नाम लिटिल लाएन डॉग पड़ा। ये फ्रांसीसी हैं।

बाइशन फ्रेज़



ऊँचाई: 9-12 इंच
वज़न: 3-6 किलो

इनके बारे में क्या ख्याल है? नही भाई ये बर्फबारी की जगह से नहीं आए हैं। बहुत पहले इन्हें युरोप के शाही दरबार में रखा जाता था।

चाओ-चाओ



ऊँचाई: 18-22 इंच
वज़न: 20-32 किलो

चाओ-चाओ चीन में दो हज़ार सालों से लोकप्रिय है। यहाँ यह पहिया-गाड़ी खींचने और रखवाली के काम आता था। चीनी लोग इसका माँस भी खाते थे। इसके छोटे-छोटे कान इसके बालों में छुप जाते हैं।

कैरी ब्ल्यू टेरियर



ऊँचाईः 46-48 इंच
वज़नः 15-17 किलो

अगर तुम इन्हें बचपन में देखो तो सोच ही नहीं सकोगे कि बड़े होने पर ये कैसे लगेंगे। छुटपन में इनके बालों का रंग काला होता है। और लगभग 18 महीने बाद यह एक युवा नीला कुत्ता बन जाता है। हाँ बीच-बीच में काले धब्बे तो दिखते ही हैं।

कमांडर



ऊँचाईः 26-32 इंच
वज़नः 35-61 किलो

हंगरी का **कमांडर** भेड़ बकरियों की रखवाली के लिए रखा जाता था। इसके भेड़ों जैसे बालों की वजह से यह भेड़ सरीखा नज़र आता है। भेड़ों पर अचानक वार होने पर यह एकदम से निकलकर उनकी रक्षा करता है।

और अब चलते-चलते तरह-तरह की पूँछ भी देखते जाओ।

एक बड़ा कुत्ता : ग्रेट डेन
बच्चे इसे पसंद करते हैं। इनके बड़े आकार की वजह से इन्हें बहुत खाना खाना पड़ता है। इनका मुँह लम्बा व कान झुके हुए होते हैं।



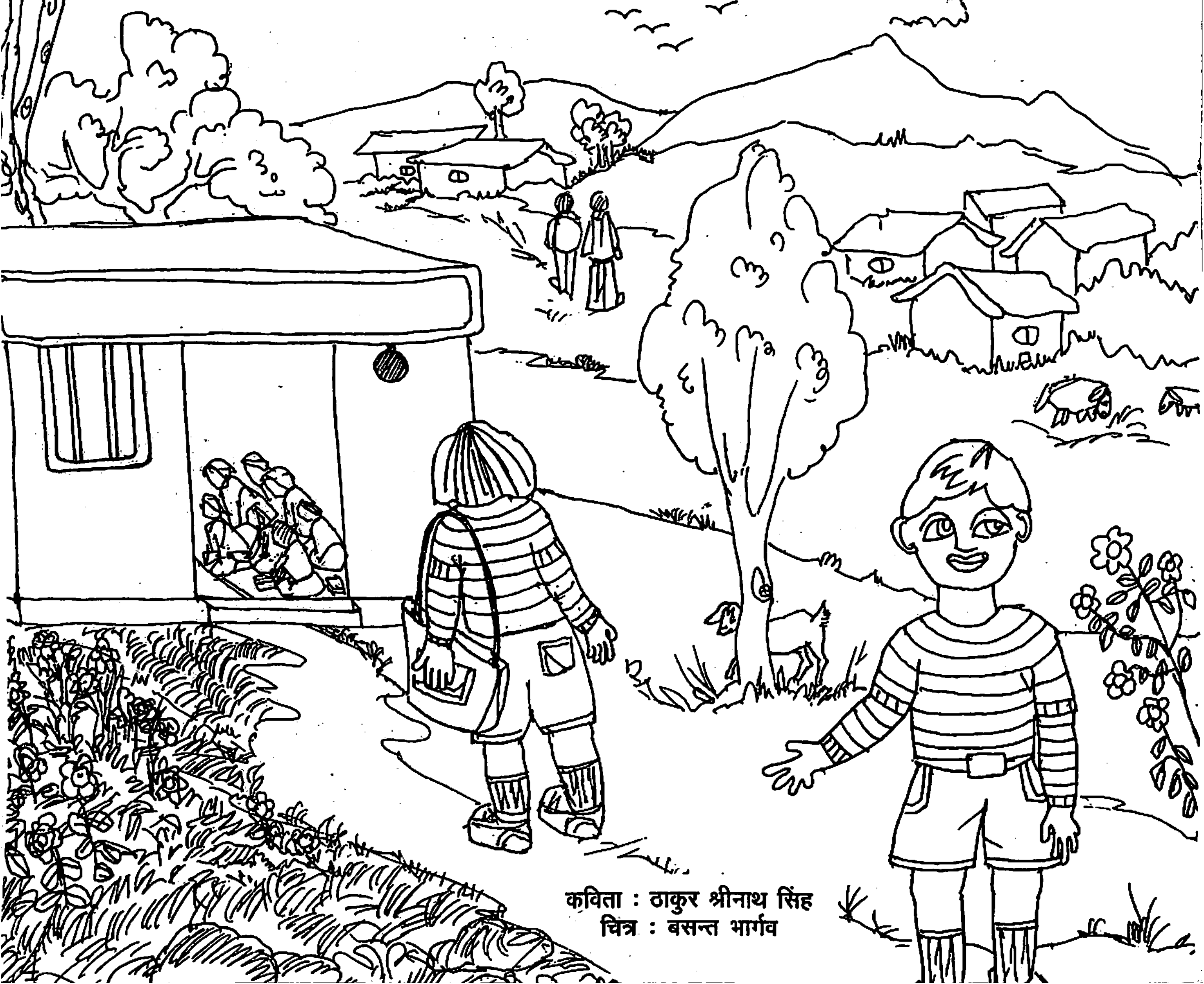
ऊँचाईः 30-32 इंच
वज़नः 50-55 किलो



मैं हूँ कौन?

एक साथ जन्मे हम दोनों
मैं और मेरा भाई।
किंतु शक्ल-सूरत मिलने से
बेहद आफत आई।
मैं हूँ कौन? कौन है भैया,
समझ न कोई पाता।
जाता यदि वह नहीं मदरसे
तो मैं ही पिट जाता।





कविता : ठाकुर श्रीनाथ सिंह
चित्र : बसन्त भार्गव

पानी 'भरा' गिलास

सामग्री : काँच का गिलास, पानी, कुछ सिक्के।



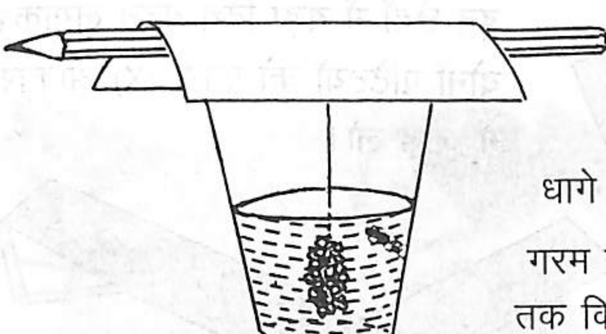
काँच के एक गिलास को पूरी तरह से पानी से भर दो। जब वह छलछलाने लगे तो सुनिश्चित हो जाएगा कि अब इसमें कुछ और आने की गुंजाइश बाकी नहीं है। अब हमारा सवाल। बिना पानी छलकाए तुम इस गिलास में कितने सिक्के डाल सकते हो? एक..दो..एक भी नहीं...।

अच्छा करके देखते हैं। चित्र में दिखाए तरीके से गिलास में एक सिक्का डालो। सावधानी बरतना कि सिक्का गिलास के किनारे से सरकता जाए। क्या हुआ? पानी टपका? नहीं, तो फिर से एक सिक्का डालो। सिक्के डालना जारी रखो जब तक कि पानी छलक न पड़े।

क्या तुम बता सकते हो कि कहाँ समाते जा रहे हैं ये सिक्के?

स्वादिष्ट मिश्री

सामग्री : डेढ़ कप चीनी, आधा कप गरम पानी, एक पेंसिल, कुछ धागे।



पेंसिल के बीच में धागे के एक सिरे को बांधकर दूसरे सिरे को लटका दो। यह धागा इतना लम्बा हो कि गिलास में लटकाने से वह पेंदे से 2 सें.मी. ऊपर लटकता रहे। धागे को पानी से गीला कर उसे चीनी में लपेट लो।

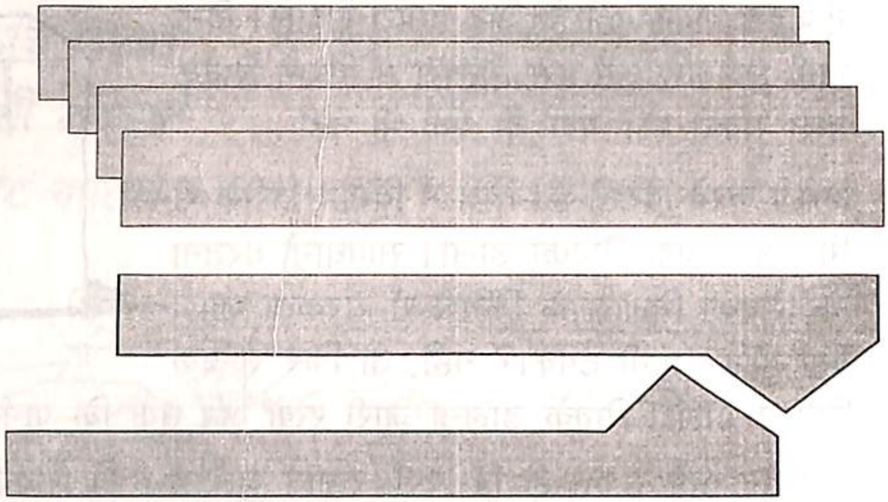
गरम पानी में चीनी डालकर तब तक हिलाते रहो जब तक कि वह पूरी तरह घुल न जाए। चीनी के न घुलने पर पानी को थोड़ा गरम किया जा सकता है। अब धीरे से पेंसिल को गिलास पर रखो। धागा चीनी के घोल में लटकता रहे। गिलास को रुमाल या किसी कपड़े से ढँक दो। और इसे एक या दो दिनों के लिए बिना हिलाए रहने दो।

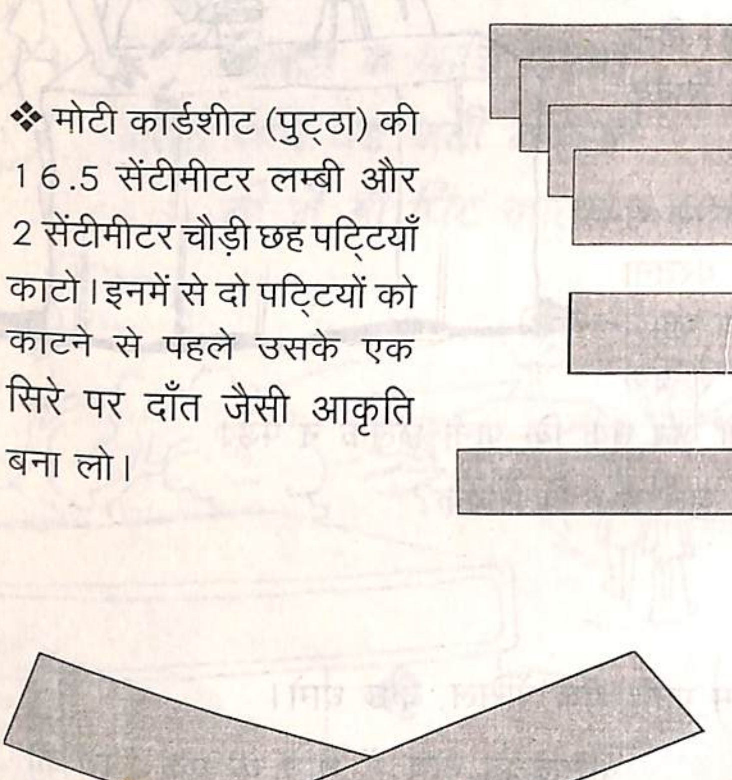
दो दिनों बाद धागे को देखो। इसे तुम चख भी सकते हो?

एक मज़ेदार खिलौना

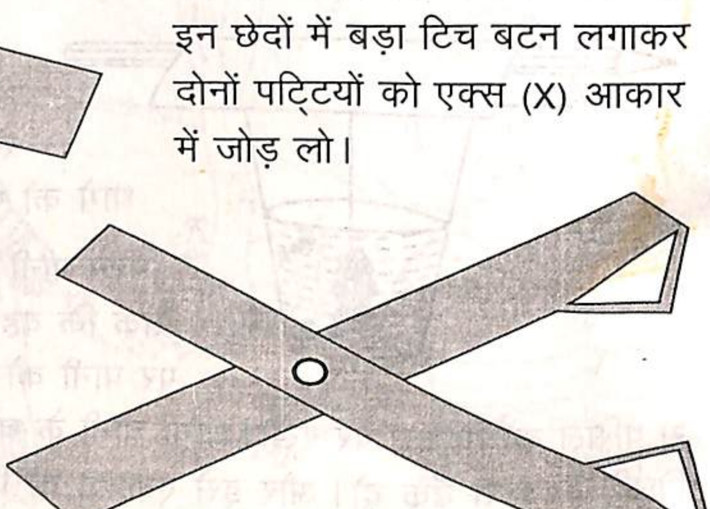
मशीनों के बारे में तो तुम चकमक के दूसरे पन्नों पर पढ़ ही रहे हो। पिछले अंक में तुमने लीवर के बारे में पढ़ा था। यहाँ लीवर के ही उपयोग से चलने वाला एक मज़ेदार खिलौना बनाने का तरीका बता रहे हैं। तुम भी इसे बनाने की कोशिश करो।

❖ मोटी कार्डशीट (पुट्ठा) की 16.5 सेंटीमीटर लम्बी और 2 सेंटीमीटर चौड़ी छह पट्टियाँ काटो। इनमें से दो पट्टियों को काटने से पहले उसके एक सिरे पर दाँत जैसी आकृति बना लो।

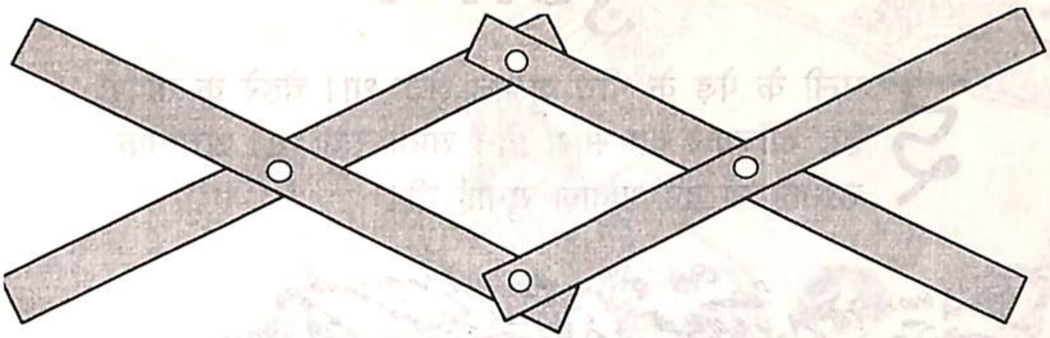




❖ सभी पट्टियों के बीचोंबीच एक–एक छेद करो। फिर दो पट्टियों को एक के ऊपर एक रखो। उसके बाद इन छेदों में बड़ा टिच बटन लगाकर दोनों पट्टियों को एक्स (X) आकार में जोड़ लो।



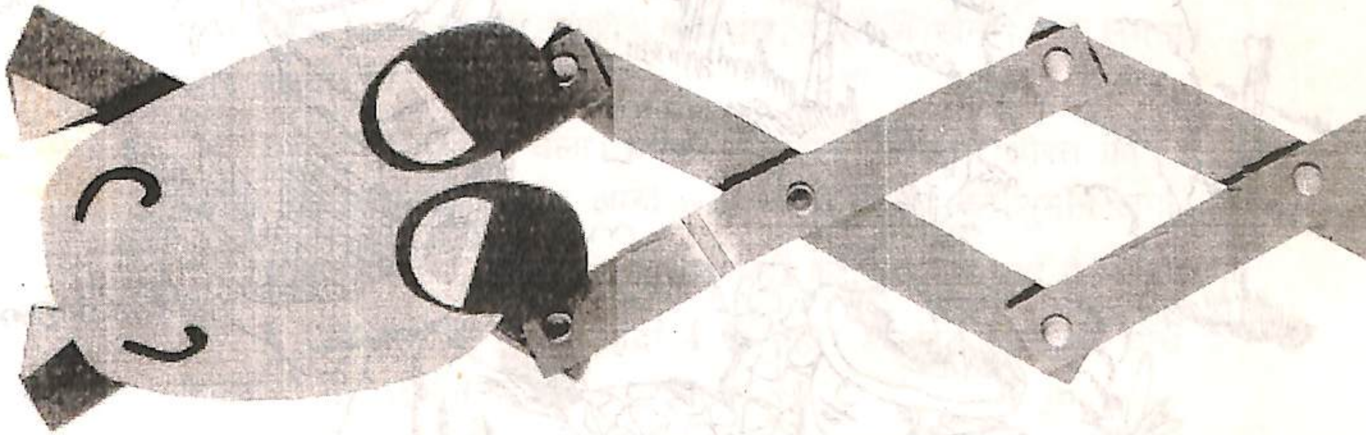
❖ इसी प्रकार बाकी चार पट्टियों को भी जोड़ लो। फिर पट्टियों के सिरों को भी आपस में पिन या टिच बटन की मदद से जोड़ लो। (अगले पेज का चित्र देखो)



❖ अब मोटी कार्डशीट के एक टुकड़े में से किसी जानवर के सिर की आकृति काटो। उस पर रंगीन कागज़ चिपकाकर उसे सजाओ। आँखें, कान, जीभ वगैरह बनाकर लगाओ। दाँत वाली पट्टी पर सिर की आकृति चिपकाओ।



तुम्हारा खिलौना तैयार है। सबसे आखिरी पट्टी के सिरे कैंची की तरह काम करेंगे। जब तुम इन्हें पकड़कर पास लाओगे तो दाँत वाले सिरे भी ऐसा ही करेंगे। इन दाँतों से पकड़कर कुछ हलका-फुलका सामान उठाया भी जा सकता है। देखो तुम क्या-क्या उठा पाते हो।



जुआन

इमली के पेड़ के नीचे जुआन लेटा था। चेहरे के ऊपर हैट खींचकर वह सारा दिन सोता रहा था। अचानक उसको माँ की आवाज़ सुनाई दी।





जुआन, कहाँ हो? फ़िर सो गए? तुम्हारे जैसा आलसी लड़का मैंने नहीं देखा। तुम सारा दिन सोते हो जबकि तुम्हारा बेचारा बाप खेत में कड़ी मेहनत करता है। क्या करूँ मैं तुम्हारा?

जम्हाइयाँ लेता हुआ जुआन उठा, आँखें मलीं, और आलसभरी अँगड़ाई ली।

माँ दरवाज़े पर मिली । उसने कहा, बाज़ार जाकर नमक और पाँच ज़िंदा केकड़े खरीद लाओ। खबरदार, रास्ते में खेलने मत लगना। और जल्दी घर लौटना।

पैसे लेकर जुआन चला। बाज़ार में उसने एक बूढ़ी औरत को केकड़े बेचते देखा। वह एक लम्बी छड़ी लेकर केकड़ों को चुभोने लगा।

औरत चिल्लाई, ऐ लड़के, मेरे केकड़ों को क्या कर रहा है?

मैं देख रहा था कि वे ज़िंदा हैं या नहीं। बड़े-बड़े रेंगनेवाले पाँच केकड़े दे दो, जुआन बोला।

केकड़ों को बंधवाकर वह नमक वाले के पास पहुँचा। तुम्हारा नमक सचमुच नमकीन है भाई? उसने पूछा। अगर सचमुच नमकीन है तो पचास सेंटावो (फिलिपीन्स का सिक्का) का दे दो।



केकड़े और नमक का थैला लेकर जुआन घर चला। सीटी बजाता हुआ वह नदी किनारे पहुँचा तो किसी ने उसको पुकारा, जुआन, आओ खेलो हमारे साथ। कितना सुहावना दिन है। आओ मज़े करें।

जुआन ने केकड़े और नमक का थैला दिखाकर कहा, माँ को इनकी ज़रूरत है।... लेकिन ठहरो... हाँ, एक तरकीब है। केकड़ों का बंधन खोलकर उसने उनसे कहा, माँ तुम्हारा इंतज़ार कर रही है, घर जाओ। इस सड़क पर सीधे चलते जाओ, इमली के पेड़ से बाएँ मुड़ जाना। सामने रसोईघर का दरवाज़ा खुला दिखाई देगा। बस वहीं माँ होगी। जाओ, जाओ।

फिर नमक के लिए किसी सुरक्षित जगह के लिए उसने चारों ओर देखा। अन्त में उसने नमक के थैले को नदी में रख दिया जहाँ पानी बहुत कम था। बस यह ठीक है। यहाँ से कोई नहीं ले जा सकता। उसने खुश होकर सोचा।

देखते ही देखते जुआन लड़कों से जा मिला। वह जी भरकर खेलता रहा और शोर मचाता रहा। जब सूरज डूबने लगा तो उसको घर लौटने की याद आई।

जुआन की माँ इमली के पेड़ के नीचे खड़ी अपने बेटे का इंतज़ार कर रही थी। जुआन को देखकर उसने चिल्लाकर पूछा, क्या जवाब है तुम्हारे पास?

जुआन ने कहा, नमक कोई चुरा ले गया!

गुस्से से माँ फिर चिल्लाई, चुरा लिया? क्या मतलब?

मैंने तो उसको बहुत सुरक्षित जगह रखा था, पानी के अन्दर। जब मैं उसको लेने गया तो वह वहाँ नहीं था।

और केकड़े?

वह घर नहीं आए? मैंने घर का रास्ता उनको साफ-साफ समझा दिया था। और वे काफी अकलमन्द लगते थे। और हाँ, ज़िंदा थे, तो चल तो सकते ही थे। जुआन ने सफाई दी।

जुआन की माँ गुस्से से काँप रही थी। उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। वह मुड़कर जल्दी-जल्दी रसोई में चली गई और ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर लिया।

जुआन बाहर खड़ा सोचता रहा कि उससे गलती क्या हुई?



चित्र : अशोक चंचल

परीक्षा पर कुछ बातें



यह मौसम है परीक्षाओं का। जहाँ देखो वहाँ बच्चे किताबों के ऊँचे-ऊँचे ढेरों के पीछे छिपे बैठे मिलते हैं। हममें से कइयों के लिए शायद बड़ा ही डरावना-सा समय होता है यह, है न। चाहे जितनी भी तैयारी कर लो, किस पेपर में कहाँ से क्या पूछा जाएगा, यह तो किसी को पता नहीं रहता। पर सवाल यह है कि क्या इस तरह की परीक्षाओं से हमें कुछ फायदा होता है? परीक्षा से किसकी जाँच होती है, समझ की या याद रखने की कौशल की? क्या परीक्षाओं का कोई और तरीका हो सकता है जो डरावना न हो? क्या परीक्षा हमें फायदा कम और नुकसान ज़्यादा पहुँचाती है?

परीक्षा के बारे में तुम्हारे ही कुछ दोस्तों का क्या कहना है, यह तो तुमने पढ़ा। यहाँ हम दो ऐसे लोगों की लिखी कुछ बातें दे रहे हैं जिन्होंने सालों-साल बच्चों के बीच काम किया है। एक तो गीजूभाई हैं, और दूसरे हैं जॉन होल्ट। दोनों ने कई साल स्कूल में बच्चों को पढ़ाया भी है और शिक्षा पर कई किताबें लिखी हैं। पहले हिस्से में कुछ अलग तरह से परीक्षा लेने के गीजूभाई के अनुभव हम पढ़ेंगे। और दूसरे में होल्ट के कुछ विचार हैं। इस बारे में तुम्हारे मन में जो बातें हों, वह तुम भी लिख भेजना।

गीजूभाई की अनोखी परीक्षा

छमाही परीक्षाओं का समय आया। बड़े साहब स्वयं परीक्षाओं के बारे में पूछताछ करने के लिए हाज़िर हुए। उन्हें परीक्षाओं का बहुत शौक था।

परीक्षा के दिन मेरा चित्त शांत था। मैं बच्चों से कह चुका था कि वे जो कुछ रोज़ाना करते हैं, वही आज भी करना है। परीक्षा में तो सब पास ही हैं। नाटकबाज़ी वाली अपनी तरकीब के अनुसार मैंने पर्दा लगवाया था और सब बच्चों को पर्दे के पीछे बैठने के लिए कहा था। जब सब लोग बैठ गए तो मैंने पर्दा उठाया।

बच्चे अपने ढंग से अपनी पसंद की कहानी दूसरे विद्यार्थियों को सुना रहे थे और प्रत्यक्ष रूप में श्रोताओं के साथ सुनाने का आनंद ले रहे थे। उन्हें सचमुच कहानी कहनी आती थी। अभिनय से, हाव-भाव से, अर्थ समझाने की दृष्टि से वे कहानी कह रहे थे। श्रोतागण पूरी तरह कहानी सुनने में डूबे थे।

जब सब बच्चों ने कहानी सुना ली तो मैंने बताया - यह थी मेरी पहली परीक्षा। भाषा के ऊपर नियंत्रण की, कहानी सुनाना आने की, स्मरण शक्ति बढ़ाने की और अभिनय की।

अब दूसरी परीक्षा की बारी थी। जब पर्दा उठा तो सब बच्चे एक कतार बनाकर बैठे हुए थे। सामने ब्लैक बोर्ड पर लिखा हुआ था - अंताक्षरी का खेल! एक बच्चे ने एक कविता सुनाई। दूसरे ने उसका अंतिम अक्षर लेते हुए दूसरी कविता सुनाई। इस तरह एक चक्कर पूरा हुआ और अंताक्षरी आगे चलती रही।

बड़े साहब ने पूछा - इन्हें आमने-सामने क्यों नहीं बिठाया? दो टीमें होनी चाहिए थीं ना!

मैंने स्पष्ट किया - जी नहीं, मैंने ही मना किया था। आमने-सामने बिठाने से हार-जीत का आभास होता है। उससे स्पर्धा और ईर्ष्या पनपती हैं। इसमें अगर एक को कविता नहीं आती तो आगे वाला बच्चा उसे सम्भाल लेता है, अंताक्षरी चलती रहती है। एक बार न आने पर भी अगली बार कविता सूझ ही जाती है।

इसके बाद मैंने शब्दों का खेल शुरू किया। एक बच्चा कोई एक शब्द बोलता था तो दूसरा बच्चा झट से उसके अंतिम अक्षर से दूसरा शब्द उठा लेता था, दूसरे शब्द के अंतिम अक्षर से तीसरा बच्चा तीसरा शब्द बना लेता था। ये खेल आसान-सा ही था। लेकिन मैंने बच्चों को ये बताया था कि कोई एक गाँव का तो

दूसरा नदियों का, कोई पहाड़ का, कोई लोक जीवन का, कोई दुकानदारी का... ऐसे शब्द बोलेगा। तो इनके बारे में बच्चों ने आपस में पहले ही तय कर लिया था। इसलिए इस खेल में सबको बहुत मज़ा आया।

इस खेल के लिए बच्चों को अधिक-से-अधिक शब्द मिलें इसके लिए मैंने उनसे कह रखा था कि वे नक्शे और शब्दकोश और किताबों वगैरह पर भी निगाह डालते रहें, तो ढेरों-ढेर नए शब्द उन्हें मिलते रहेंगे। कई बार तो बच्चे खेल खेलने के बजाय अलग-अलग तरह के शब्दों को एकत्रित करने में ही लगे रहे। ये बातें मैंने अपने साथी शिक्षकों को बताईं।

बड़े साहब ने कहा - मुझे इस खेल में असीम सम्भावनाएँ नज़र आ रही हैं। इस तरह के सभी खेलों से बुद्धिबल तो बढ़ता ही है, सामान्य ज्ञान भी बढ़ता है इसलिए इसे सभी कक्षाओं में शामिल किया जाना चाहिए।

परीक्षण का अत्याचार

अधिकांश शिक्षक, परीक्षा को शिक्षा का एक ज़रूरी अंग मानते हैं। पर मेरी राय में परीक्षा लेना न तो ज़रूरी है, न ही उपयोगी। इससे फायदा कम, नुकसान ज़्यादा होता है।

परीक्षा कुछ परिस्थितियों में ज़रूरी हो सकती है। जैसे अगर कोई संगीतज्ञ संगीत सभा में सितार बजाना चाहे। तो हो सकता है कि सभा के आयोजक उससे कहें कि वह पहले सितार बजाकर दिखाए। ऐसे ही अगर कोई डॉक्टर या सर्जन का काम करना चाहे तो उसे कागज़ पर नहीं, आपरेशन टेबिल पर कुछ लोगों का ठीक से आपरेशन करके दिखाना होगा। वह भी कुछ दूसरे जानकार सर्जनों के सामने।

कई बार लोग अपनी प्रगति मापने के लिए खुद ही अपनी परीक्षा लेते हैं। तुम खुद ही सोचो, क्रिकेट खेलते हुए गेंद को ठीक स्टम्प पर मारने के लिए, या गिल्ली को दूर तक उचकाने के लिए तुम खुद कितने अभ्यास करते हो। इसी तरह टाइपिस्ट अभ्यास द्वारा अपनी स्पीड बढ़ाते हैं। यानी ईमानदारी से किए जाने वाले अभ्यास में सीखने वाला लगातार, अपनी कुशलता और ज्ञान की जाँच करता है।

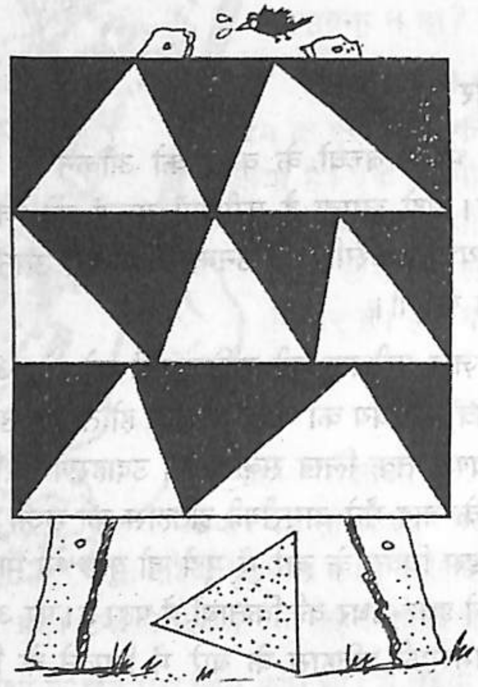
परंतु स्कूलों में शिक्षक या बड़े लोग बच्चों के परीक्षण दो प्रमुख कारणों से करते हैं। पहले तो, बच्चों को डरा-धमकाकर हम उनसे वह करा पाते हैं जो हम चाहते हैं। दूसरे, हमें बच्चों को पुरस्कार और सज़ा बांटने का एक आधार मिलता है। बहुत से शिक्षक और छात्र भी यह मानते हैं कि चाहे परीक्षाएँ बच्चों को डराती हों, फिर भी वे बच्चों के काम को आँकने के लिए ज़रूरी हैं। मुझे लगता है परीक्षाएँ बच्चों को जितना ज़्यादा भयभीत करेंगी, वह उनकी सीख को उतना ही कम माप पाएँगी।

अब ज़रा परीक्षक की कठिनाइयों को लें। अगर किसी छात्र ने विषय को थोड़ा भी पढ़ा हो तो वह उसके बारे में घण्टों तक लिख सकता है। उदाहरण के लिए आठवीं के बाद मैंने अमरीकी इतिहास को छुआ तक नहीं है। इस विषय के बारे में मुझे जो कुछ भी मालूम है उसे मैंने इधर-उधर की किताबों में पढ़ा है। पर अगर मुझसे अमरीकी इतिहास के बारे में लिखने के लिए कहा जाए तो मैं बहुत से पन्ने भर डालूँगा। आप ही बताएँ, भला कोई मेरे ज्ञान को तीन घण्टे में कैसे आँक सकता है? यह एक असम्भव कार्य है। लेकिन फिर भी, हरेक स्कूल में शिक्षक ऐसा करते हैं और बच्चों के बीच अंतर पैदा करते हैं। जैसे बच्चों के बीच अंतर पैदा करना ही, शिक्षक का काम है। इसलिए शिक्षक ऐसे प्रश्न पूछते हैं, जिनके उत्तर कम-से-कम कुछ छात्र तो न दे पाएँ।

परीक्षाओं के खिलाफ मुझे अन्य आपत्तियाँ भी हैं। परीक्षाओं से उन छात्रों को सज़ा मिलती है जो थोड़ा धीरे काम करते हैं। जो अनुमान लगाने में चतुर होते हैं, परीक्षाएँ उनका ही साथ देती हैं। परंतु जो छात्र अपने काम को सावधानी से करते हैं, परीक्षाएँ उनके पक्ष में नहीं होतीं। ऐसे छात्रों को परीक्षाएँ पीछे धकेलती जाती हैं और हर परीक्षा के लिए उनके मन में खौफ पैदा करती जाती हैं।

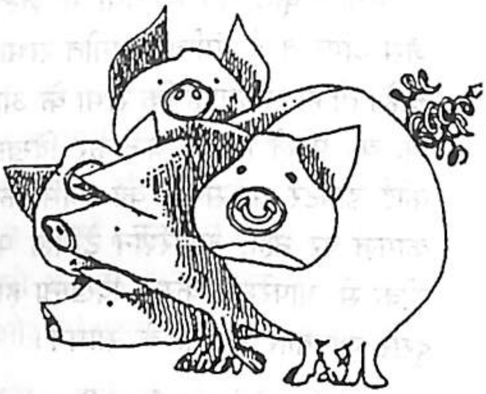


माथापच्ची

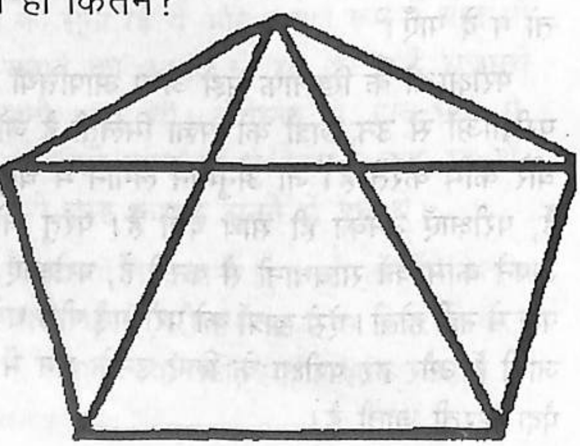


इस बोर्ड को देखो। इसे कुछ तिकोनी लकड़ियों को जोड़कर बनाया गया था। धीरे-धीरे इसके सात टुकड़े गिर गए। एक टुकड़ा तो तुम्हें भी दिख रहा होगा। क्या तुम बता सकते हो कि यह टुकड़ा इन सात खाली खाँचों में से किससे गिरा होगा?

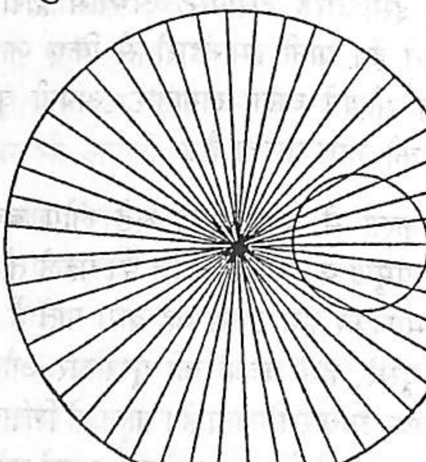
कुल कितने सुअर हैं?



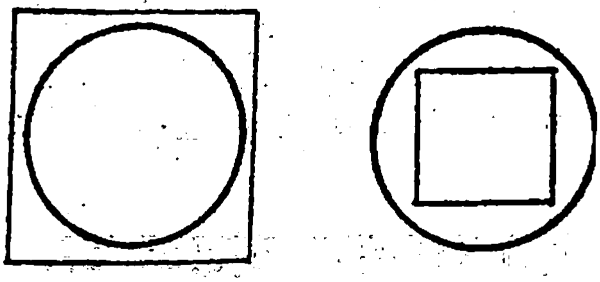
ऐसे देखोगे तो तुम्हें इस आकृति में कुल पाँच त्रिभुज व एक चतुर्भुज दिखेगा। लेकिन इसमें कुछ और त्रिभुज भी छुपे हैं। क्या तुम बता सकते हो कितने?



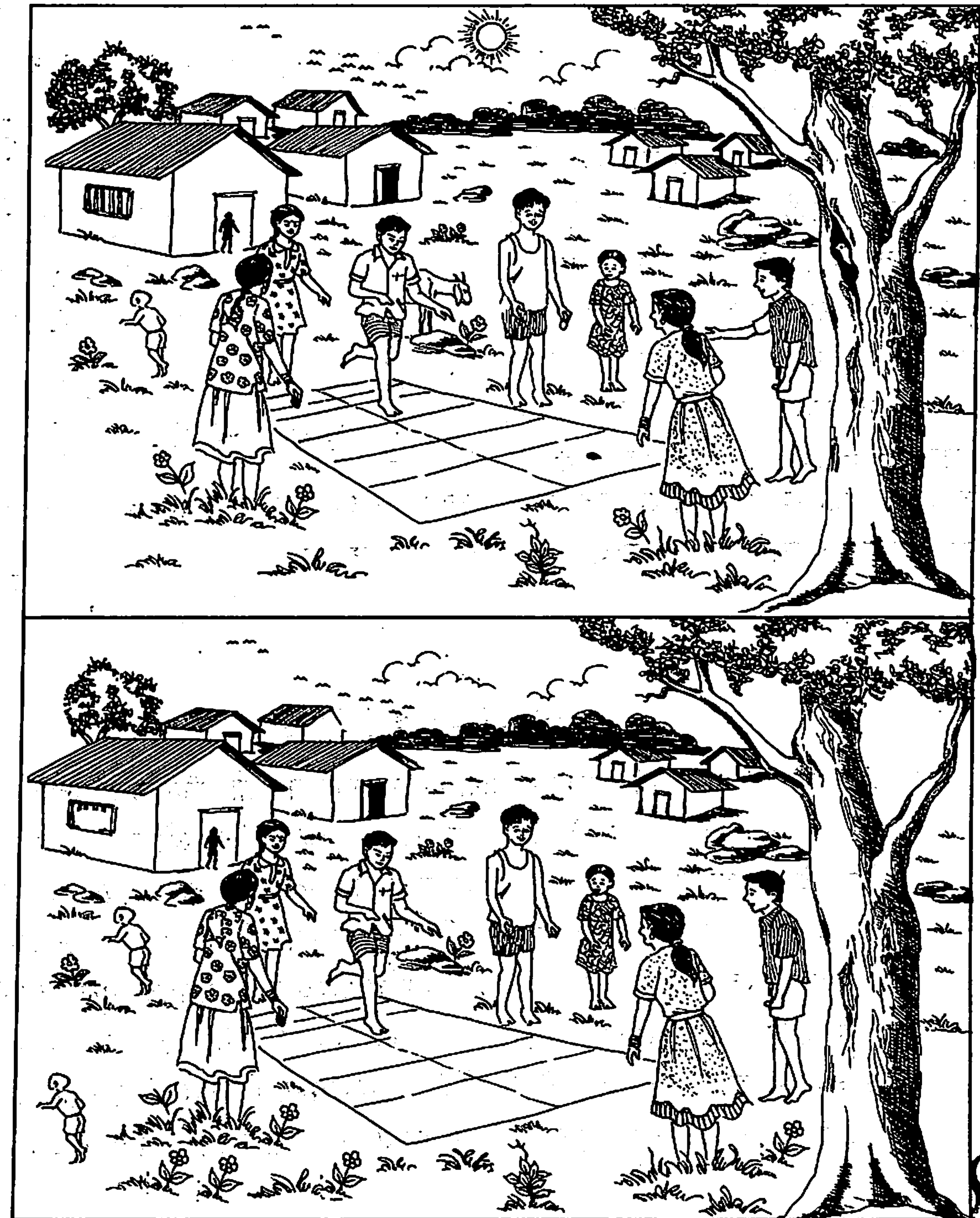
इस चित्र को गौर से देखो। इसमें जो गोले दिख रहे हैं। क्या दोनों बिल्कुल गोल हैं? चाहो तो परकार घुमाकर देख लो।



यहाँ दो गोले हैं। एक चौखाने के भीतर और एक चौखाने के बाहर! इनमें से कौन-सा बड़ा है?



इन दो तस्वीरों में कितने अन्तर हैं?





चकमक समाचार

तेनालीराम का मुण्डन नाटक का मंचन हुआ



दिल्ली के वसुंधरा एनक्लेब में एक चकमक क्लब चलता है। इस क्लब को बच्चे ही चलाते हैं। छुट्टी के दिन मिलजुलकर बच्चे कविता, कहानी सुनाते हैं, नाटक करते हैं। और हाँ चकमक पुस्तकालय भी चलाते हैं। पिछले महीने इसी क्लब के तीसरे वार्षिक उत्सव के अवसर पर बच्चों ने एक नाटक खेला। नाटक चकमक के नवम्बर अंक में प्रकाशित हुआ था। तेनालीराम का मुण्डन नाम का यह नाटक शायद तुमने भी इसे पढ़ा होगा। इस नाटक का निर्देशन भी बच्चों ने मिलकर ही किया था।

⊙ रपट : शिप्रा सिंह

स्यूस के सौ साल

थियोडोर गीसल उर्फ डॉक्टर स्यूस इस दो मार्च को सौ साल के हो जाते। शायद तुम इस नाम से परिचित होगे। डॉक्टर स्यूस ने बच्चों के लिए अँग्रेज़ी में कई मज़ेदार किताबें लिखी हैं। आज उनकी इन चवालीस किताबों का अनुवाद दुनिया की इक्कीस भाषाओं में हो चुका है। इन किताबों की लोकप्रियता का अंदाज़ा इसी बात से लगा सकते हो कि अब तक इनकी पाँच अरब कापियाँ बिक चुकी हैं। गीसल जब हाईस्कूल के छात्र थे, तब उनके एक टीचर ने उनसे कहा था कि कला में वे कभी भी सफल नहीं हो पाएँगे। ऐसे ही उनकी पहली किताब को भी पहले सत्ताइस प्रकाशकों ने छापने से इनकार कर दिया था। ऐसे जाँबाज़ इंसान को सलाम!

सूखे पर प्रदर्शनी का आयोजन

पिछले महीने कमला निम्बकर पाठशाला के बच्चों ने एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। यह पाठशाला महाराष्ट्र के सातारा ज़िले में है। पिछले तीन साल से कम बारिश की वजह से यहाँ सूखा पड़ा हुआ है। यह प्रदर्शनी पानी की समस्या पर आधारित थी। प्रदर्शनी में नवमीं तक के बच्चों ने भाग लिया। इस प्रदर्शनी में बच्चों ने कोलाज, कविता, चार्ट, नक्शे, कहानी आदि के ज़रिए अपनी बात कही। बच्चों ने नदी, तालाब आदि जगहों का भ्रमण भी किया। और सूखे के कारणों पर बातचीत भी की।

⊙ रपट : शुभांगी तावरे, फलटण महाराष्ट्र

नन्हीं कलम और बस्ते पर चूहा का लोकार्पण



पिछले महीने विश्व पुस्तक मेले में दिल्ली के एक चकमक क्लब की पत्रिका नन्ही कलम का लोकार्पण हुआ। यह इस पत्रिका का नौवाँ अंक है। इसी अवसर पर चकमक के एक पाठक शिवांक की कविताओं का संग्रह बस्ते पर चूहा का भी लोकार्पण हुआ।

पुस्तकों को फैलाता एक पुस्तकालय

क्या तुम्हारे स्कूल में पुस्तकालय है? वैसे अच्छे पुस्तकालय कम ही होते हैं, ऐसे पुस्तकालय जहाँ तरह तरह की किताबें मिल पाएँ। एक ऐसा विद्यालय है जहाँ पुस्तकालय के दो पीरयड होते हैं। इसके साथ यह स्कूल अपने आसपास भी पुस्तकें उपलब्ध करवाने के लिए प्रयास कर रहा है। विद्या भवन बुनियादी माध्यमिक विद्यालय नाम का यह स्कूल रामगिरि, उदयपुर में है।



यहाँ पुस्तकें पढ़ने के अलावा बच्चे विभिन्न गतिविधियाँ भी करते हैं। विद्यार्थी यहाँ से अपने गाँव के बच्चों के लिए भी किताबें ले जा सकते हैं। उन्हें ये किताबें पंद्रह दिनों के अन्दर जमा करनी होती हैं। किताबों के रखरखाव सम्बंधी काम भी विद्यार्थी मिलजुलकर करते हैं। विद्यार्थियों के साथ साथ अध्यापक भी इस पुस्तकालय में किताबें पढ़ते हैं और उन पर चर्चा करते हैं।

⊙ रपट : उषा शर्मा, उदयपुर, राजस्थान



खेल समाचार

हॉकी

इन दिनों हॉकी में प्री ओलम्पिक क्वॉलीफाइंग मुकाबले चल रहे हैं। पाकिस्तान, न्यूज़ीलैण्ड, पोलैण्ड ने अभी तक अच्छा खेल दिखाया है। वहीं हमारी टीम बेल्जियम जैसी नौसीखिया समझी जाने वाली टीम से नहीं जीत सकी।

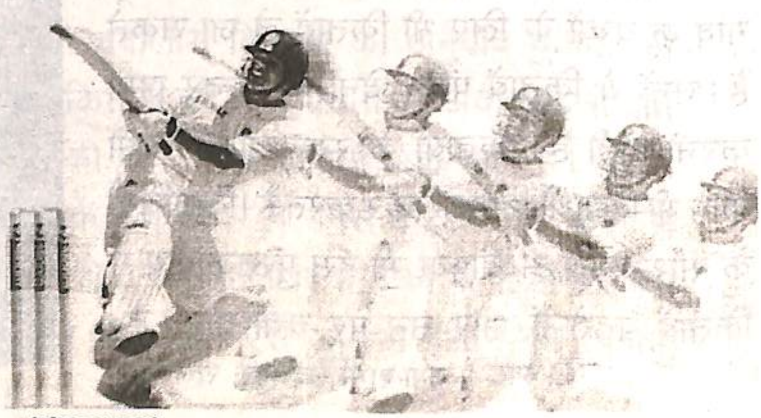
टेबिल टेनिस

विश्व टीम टेबिल टेनिस प्रतियोगिता में भारतीय महिला टीम वर्ग ई में सबसे ऊपर पहुँच गई है। भारतीय टीम ने अपने आखिरी मैच में बुल्गारिया की टीम को 3–2 से हराया।

क्रिकेट



चौदह साल बाद हमारी क्रिकेट टीम हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान से वहीं खेलेगी। जब तक यह अंक तुम्हारे हाथों में आएगा तब तक शायद दो-तीन एक दिवसीय मैचों का परिणाम भी आ चुका होगा। काफी सालों बाद तुम्हें रावलपिण्डी एक्सप्रेस उर्फ शोएब अख्तर की रफ़्तार देखने को मिलेगी। हमारी टीम दस मार्च को पाकिस्तान जाएगी। वहाँ हमारी टीम पाँच एक दिवसीय मैच और तीन टेस्ट मैच खेलेगी। न्यूज़ीलैण्ड ने दक्षिण अफ्रीका को आखिरी एक दिवसीय मैच में हराकर एक दिवसीय मैचों की श्रृँखला 5–0 से जीत ली है। न्यूजीलैण्ड ने पहली बार दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ एक दिवसीय या टेस्ट श्रृँखला जीती है। हमारी महिला क्रिकेट टीम इन दिनों शानदार फॉर्म में चल रही है। कलकत्ता के तीसरे और आखिरी मैच में भारतीय टीम ने वेस्ट इण्डीज़ के हराकर 3–0 से श्रृँखला जीत ली है।





गोलू के कारनामे

इस बार जिस किताब के बारे में तुम्हें मैं बताने जा रहा हूँ वो मुझे बहुत पसंद आई। उम्मीद है यह तुम्हें भी गुदगुदा जाएगी। किताब का नाम है गोलू के कारनामे। हालाँकि किताब में कारनामे को कारनामें लिखा गया है। इस किताब के लेखक रामबाबू हैं। और प्रकाशन अनुराग ट्रस्ट ने किया है।

हर पन्ने पर गोलू कोई ऐसी हरकत करता है जिससे तुम्हारी हँसी फूट पड़ेगी। इसमें ऐसे कुल चौंतीस कारनामे हैं। हालाँकि इनमें से कुछ कारनामों में गोलू का हाथ ही नहीं रहता। एकाध जगह अंधविश्वासों को बढ़ावा भी मिल गया है जैसे बीन बजाकर साँप इकट्ठा करना। ऐसे ही कहीं-कहीं झूठ बोलने की सज़ा जैसी चीज़ें भी हैं जो खटकती हैं।

इस किताब के चित्र बिल्कुल सरल, सहज हैं। वे तुम्हें भी कलम या कूची उठाने को उकसाएँगे। तुम भी अपनी किसी ऐसी फुलझड़ी के चित्र बना सकते हो। अगर ये चित्र थोड़े बड़े होते तो और मज़ेदार हो सकते थे। उनमें चित्रित चीज़ों के विवरण या ब्यौरे हैं ही नहीं। कुछ चित्र अस्पष्ट भी हो गए हैं। एक और चीज़ जो इस अच्छी किताब में बार-बार खटकती है वो है प्रूफ की कई गल्तियाँ। कुछ भी हो पर किताब है बहुत मज़ेदार! और हाँ चार रंगीन और बत्तीस अन्य पेज यानी कुल छत्तीस पेजों की इस किताब की कीमत बारह रुपए है। चलो गोलू के एक-दो कारनामे तुम भी देखो।



• समीक्षा: सुशील शुक्ल

किताब मँगाने का पता है–

अनुराग ट्रस्ट, डी– 68,
निराला नगर, लखनऊ-20


गोलू इस लकड़ी के दो टुकड़े करो
मैं थोड़ी देर बाद आता हूँ
वाह!
कट गई


गोलू का एक और कारनामा
गोलू बाजार से हरी सब्जी ले आओ
लो बेटे
पैसे लीजिए
अरे! हरी सब्जी क्यों नहीं लाए..?
सब्जी इस गाय के पेट में है



चाँदनी चौहान, पाँचवीं, भोपाल, म.प्र.



हेमा, सातवीं, धार, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003



दीपेन्द्र सिंह कौले, पाण्डुरना, बालाघाट, म.प्र.

रेक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना